ॐ

ब्रह्म सत्यम् समता अपार शक्ति सरब आधार

समता

आध्यात्मिक पत्र

(सहित हस्त लिखित पत्रों के)

(परम योगीराज श्री मंगतराम जी महाराज)

संगत समतावाद दिल्ली (पंजी)

समता योग आश्रम, पुल रेल रिंग रोड़

नारायणा, नई दिल्ली - 110 028 (भारत)

प्रथम संस्करण 1000
मई -1999

© सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : 10.00 रु०

संगत समतावाद की ओर से पैलीकन-प्रिंट-सैटर,
देश बंधु गुप्ता मार्ग, करोल बाग,
नई दिल्ली 110 005 से मुद्रित (फोन 3524181)

श्री सद्गुरुदेव महात्मा मंगतराम जी महाराज

संक्षिप्त जीवन परिचय

पूज्यपाद श्री सत्गुरुदेव महात्मा मंगतराम जी वर्तमान युग के जन्म सिद्ध सत्पुरुष हुए हैं। आपका जन्म मंगलवार दिनांक ९ मग्घर सम्वत् १९६० तदानुसार २४ नवम्बर, १९०३ को प्रात: ४ बजे शुभ स्थान गंगोठियां ब्राह्मणां, जिला रावलपिण्डी (पाकिस्तान) के एक कुलीन ब्राह्मण परिवार में हुआ। आप बाल- ब्रह्मचारी, पूर्ण योगी, परम त्यागी एवं ब्रह्मनिष्ठ आत्मदर्शी महापुरुष थे। आप बाल्य काल से ही सादगी, विनम्रता, कुशाग्र बुद्धि एवं भक्ति के प्रति मूर्ति थे।

आप में "स्थितप्रज्ञ" के समस्त लक्षण पूर्ण रूपेण घटते थे। १३ वर्ष की स्वल्पायु में आत्म साक्षात्कार कर लेने के पश्चात् आप आजीवन सांसारिक प्राणियों का उद्धार करते रहे। देश और काल के अनुसार जहाँ कहीं भी आपने धर्म की मर्यादा को भंग होते देखा तथा सामाजिक नियमों के पालन में त्रुटि पाई, वहाँ पर ही धर्म की मर्यादा की संस्थापना की और सदाचारी जीवन बिताने का उपदेश देकर सामाजिक ढांचे को विशृंखल होने से बचाने का प्रयत्न करते रहे।

आप अपनी मधुर वाणी और निर्मल विचारों द्वारा हर एक को प्रभावित कर लेते थे और सरल एवं सुबोध भाषा में आध्यात्मिकता के गम्भीर विषयों को सहज ही समझा दिया करते थे। आपने समता के उद्देश्य का जगह-जगह पर प्रचार किया और यह सिद्ध कर दिया कि समता सिद्धान्त को अपनाकर ही मानव संकुचित विचारधारा, साम्प्रदायिकता तथा जाति-पाति के बन्धनों से ऊपर उठ सकता है।

'आपने सांसारिक प्राणियों को सत्शान्ति की प्राप्ति के निमित्त समता के पांच मुख्य साधनों (१) सादगी, (२) सत्य, (३) सेवा, (4) सत्संग और (५) सत् सिमरण को अपने निजी जीवन में ढालने का उपदेश दिया। सत् पर आधारित होने के नाते आपके सभी उपदेश विश्व कल्याण की भावना को अपने में संजोये हुए हैं। आपने भारत के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों का भ्रमण करके जहाँ रूढ़िवादियों एवं अन्धविश्वासों का खण्डन किया, वहाँ सत् के जिज्ञासुओं को समता का पावन सन्देश देकर उन्हें परमार्थ पथ पर आरुढ़ किया। आपकी वाणी का संग्रह ग्रन्थ " श्री समता प्रकाश" और वचनों का संग्रह ग्रन्थ " श्री समता विलास" के रूप में प्रकाशित हो चुका है।

आप ४ फरवरी १९५४ को ५० वर्ष की आयु में गुरु नगरी अमृतसर में अपने नश्वर शरीर का त्याग करके परमसत्ता में विलीन हो गये। आप की अन्तेष्टी समतायोग आश्रम छछरौली रोड जगाधरी (हरियाणा) में ५ फरवरी १९५४ शुक्रवार को की गई।

गुरुदेव का सदुपदेश

एक ईश्वर को कुल दुनिया का आधार मानना और नित आनन्द स्वरूप जानना और हर एक के अन्दर उसका प्रकाश देखना, तमाम कर्मों के फल की वासना ईश्वर निमित्त त्याग करना, हर वक्त दीन भाव को धारण करना, सब जीवों का हितकारी होना, मन, वच, कर्म से सबका भला चाहना, अपने शरीर के मद का त्याग करना, हर एक गुणी पुरुष का सत्कार करना, हर वक्त अपने जीवन उद्धार की खातिर यत्न धारण करना, नाशवान् शरीर से जीवित में ही उपरस हो जाना और आत्म आनन्द में हर वक्त मग्न रहना, यह धारणा ही असली धर्म है। इस को प्राप्त करके जीव सम भाव ब्रह्म शब्द में लीन हो जाता है, जो सब संसार का मूल है और आनन्द धाम है।

(ग्रथ श्री समता विलास' से)

दो शब्द

गुरुदेव के पत्र

जहां गुरुदेव की अनुभवी वाणी और विचारों को आध्यात्मिकता के क्षेत्र में एक स्थान प्राप्त है वहाँ योग तथा भारतीय संस्कृति और सभ्यता के क्षेत्र में भी गुरु देव के अमूल्य हस्तलिखित पत्रों को उच्च स्थान प्राप्त है। कारण यह है कि यह पत्र व्यवहारिक जीवन का अंग तो हैं ही लेकिन जहाँ प्रेमियों की शंकाओं का समाधान करना होता या किसी आदर्श की व्याख्या करनी होती या समय पर समता से हीनता देख चेतावनी देनी होती, वहाँ यह पत्र समता अनुकूल आचरण का एक अनमोल कोष ही समझने चाहियें।

चूंकि समय ने संस्कृति और सभ्यता के मूल्यों को बदलते और बिगड़ते देखा है और नकल को असलीयत का जामा ओढ़ते देखा है। इसलिए गुरु देव के पत्रों के साथ-साथ उनकी फोटो कापी भी दी जा रही है। ताकि गुरु देव के हस्तलिखित पत्र अगर एक बार अपने असली सरूप में पेश हो जायें तो किसी को उनकी तहरीर (तरज़े ब्यान या लिखने के ढंग) में परिवर्तन करने या किसी शब्द को भंग करने का साहस न हो। इसलिये भी कि गुरुदेव ने चूंकि कहीं कहीं अपनी इबारत को खुद भी बदला है। इसलिए पत्रों की असल भी साथ दी जा रही है।

संतजनों के निकट बैठकर सत् की जिज्ञासा रखने वाले सज्जन नाना प्रकार के प्रश्न कर के अपने मन के संशयों को निवृत करने का प्रयत्न करते हैं और जब शारीरिक रूप से एक दूसरे से दूर हो तो पत्र व्यवहार द्वारा ही संशय निवृति हो सकती है। ऐसी रीति संसार में चली आई है। जब मानव सत् मार्ग में अग्रसर होने का विचार करे तो उस के मन में कई प्रकार के सवाल खड़े हो जाते हैं। क्योंकि जिस की तरफ जाने का ख्याल करता है,

वह अदृश्य वस्तु है। इस के विपरीत संसार का सारा प्रपंच हर समय दृष्टि और सम्पर्क में आ रहा है। इस वास्ते इस में लगाव होना स्वाभाविक है। इस युग के सत्पुरुष श्री मंगतराम जी महाराज से भी इसी प्रणाली के अनुसार प्रेमी सज्जन समय समय पर पत्र व्यवहार द्वारा विचार विनिमय करते रहते थे। क्योंकि संतों का एक-एक वचन संसारी जीवों के लिए कोई न कोई सिख्या ही लिए होता है इसलिये पत्र व्यवहार करने वाले तो उन से लाभ प्राप्त करते ही हैं, बाद में ऐसे ही पत्र आम जनता के लाभार्थ पुस्तकों की सूरत में छप जाते हैं। श्री सत्गुरुदेव के शारीरिक रूप में हम से अलग हो जाने के पश्चात काफी पत्र असल सहित फरवरी सन् 1997 के समता दर्पण द्वारा प्रेमी पाठकों तक पहुँचाये जा चुके हैं और हमारा प्रयास जारी है कि अधिक से अधिक संख्या में असल पत्र हमें मिलें ताकि प्रेमी पाठकों के लाभ के लिए प्रकाशित किये जा सकें। आगे दिये गये दो पत्रों में एक प्रेमी के प्रश्न के उत्तर में विचार प्रकट फरमाये गये हैं

क्या गृहस्थ जीवन अच्छा है या विरक्त जीवन और क्या सिनेमा देखना अच्छा है ? इस के लिए गुरुदेव से आज्ञा मांगी है। आप देखेंगे कि किस प्रकार गुरुदेव ने पत्र द्वारा उस प्रेमी की तसल्ली कराई (इन दोनों का असल हमें दोबारा नहीं मिल सका) इस के अतिरिक्त कुछ और पत्र भी यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं जिनका असल भी साथ दिया जा रहा है।

टिप्पणी : आश्रम सम्बन्धी तथा संगत सम्बन्धी यह आदेश हो सकता है बहुत से प्रेमियों को पढ़ने का अवसर प्राप्त न हुआ हो अतः संगत के प्रेमियों की जानकारी तथा सही तौर पर इसे क्रियान्विन करने हेतु पुणः प्रकाशित किये जाते हैं। श्री गुरु देव के हस्त लिखित पत्रों सहित निःसंदेह यह पत्र पहले जीवन गाथा में आ चुके हैं।

विषय सूची

पत्र नं०   पृ० सं०

1.प्रभु प्रायणता को अंत: करण में नि: चल करने की तलकीन…..……………..……………………3
2.योग सम्बन्धी…………………………………………………………………………....7
3.योग सम्बन्धी……………………………………………………………………………..10
4.अन्तरगति अभ्यास की विधि…………………………………………………………………..19
5.ईश्वर प्रायणता और नाम सिमरन………………………………………………………..27
6.सम्मेलन हाजरी और गुरु वचन विश्वास…………………………………………………..32
7.सच्ची खुशी की तलाश…………………………………………………………………37
8.समता ही असली खुशी है……………………………………………………………...43
9.समता की तालीम को अपना कर देश की जागृति………………………………………49
10.शब्द क्या है ?..55
11.मानसिक भाव को निर्मल करना……………………………………………………59
12.गुरुदेव की अपने शिष्यों से तवक्को…………………………………………………64
13.ईश्वर, प्रायणता का आदेश………………………………………………………...69
14.ईश्वर, प्रायणता का आदेश……………………………………………………………...72
15.आश्रम सेवा सम्बन्धी आदेश……………………………………………………...76
16.आश्रम सेवा सम्बन्धी आदेश (शिमला से)……………………………………………...81
17.मानव जीवन में अपनाने योग्य खास हिदायात………………………………………...87
18.कर्तव्य पथ की याद……………………………………………………………………94
19.सत् धर्म प्रीति और लोक सेवा……………………………………………………..98
20.लोक सेवा में असली कल्याण…………………………………………………101
21.गुरु उपदेश द्वारा मानसिक शान्ति……………………………………………………..104
22.समता का कोई प्रचारक नहीं……………………………………………………...110
23.समता के असूलों पर कारबन्द होने की तलकीन…………………………………...117
24.आश्रम सेवा की प्रेरणा……………………………………………………………...121
25.चारों की भिन्नता में बादमुबाद……………………………………………………124
26.जिन्दगी को धर्म का सिपाही बनाओ………………………………………………127
27.अमली जीवन के बगैर असली खुशी नहीं………………………………………...131
28.इरादे की दृढ़ता…………………………………………………………………………136
29.जिम्मेवार जिन्दगी का एहसास………………………………………………………..140
30.असली जिन्दगी सत की तलाश है………………………………………………………143
31.अपने फर्ज को समझ लेने से अशान्ति का नाश…………………………………………148

पत्र नं० पृ० सं०

32.समता के बाल मेम्बरों का धर्म.....152
33.बच्चों को सही हिदायत.....155
33.सतगुणों को धारण करना.....158
34.सदाचारी जीवन और ईश्वर भक्ति.....164
35.कर्म फिलासफी (जीव की गति).....171
36.अमली जीवन की तलकीन.....175
37.सेवा और देश भक्ति.....181
38.पहले अपना जीवन पवित्र करो फिर दूसरों का.....185
37 839.समता धर्म को फैलाने का आदेश.....188
40.समता के आदर्श को ऊँचा करने का आदेश.....191
41.कल्याण दृढ़ निश्चय में गृहस्थ विरक्त का स्वाल नहीं.....194
42.गृहस्थ जीवन या विरक्त.....196
43.सिनेमा सदाचार का नाशक.....198
44.बाअसूल जीवन की तलकीन.....202
45.गुरु भक्त होने का आदेश.....206
46.समता की तालीम संगठन पैदा करती है.....209
47.प्रभु प्रायणता का आदेश.....212
48.दुख सुख प्रभु इच्छा में देखकर धीरज
49.ग्रंथ की छपाई भागों में
50.आश्रम में कुटिया
51.सदाचारी और परोपकारी जीवन की ज़रूरत
52.समता ही संसार के सब धर्मों का मम्बाह (स्त्रोत) है
53.सद्गुणों को अपनाने की चेतावनी
54.गुरु आज्ञा उलंघन पर दण्ड

आश्रम

1.आश्रम ट्रस्ट
2.प्रबंधक मण्डल संगत समतावाद
3.समता योगाश्रम जगाधरी की प्रबंध नीति
4.आश्रम सम्बन्धी आदेश
5.समता के प्रेमियों के लिए नियम
6.आश्रम में स्वार्थ कारज की पाबन्दी
आरती, समता मंगल

महा मन्त्र

ॐ

ब्रह्म सत्यं

निरंकार अजन्मा अद्वैत

पुरखा सर्व व्यापक कल्याण मूरत

परमेश्वराय नमस्तं

॥ महामन्त्र का भावार्थ ॥

पार ब्रह्म परमेश्वर पहले भी सत्य था, अब भी सत्य है, आगे भी सत्य ही होगा। वह अमर तत्व आकार रहित है, वह जन्म मरण से भिन्न शक्ति है। वह सब स्थानों पर और सब घटों में रमा हुआ है। वह मुक्ति दाता है। ऐसे परम ज्योति स्वरूप परमेश्वर को नमस्कार है।

॥ मङ्गलाचरण ॥

नारायण पद बंदिए ताप तपनन होये दूर,
नमो नमो नित चरण को जो सरब आधार हजूर !
हिरदे सिमरो नाम को नित चरणी करो दण्डौत,
सत स्रद्धा से पूजिये रख सत्गुरु की ओट !
दुबिधा मिटे मंगल होये जो चरण कंवल चितधार,
रिद्ध सिद्ध आवे घर माहीं पावें जय जय कार !
साचा ठाकुर सरब समराथा अपरम शक्त आपार,
"मंगत" कीजे बन्दना नित चरणी बलिहार !
सत मारग सोझी मिली तन मन भया निहाल,
गवन मिटी संसार की सत्गुरु मिले दयाल !
बार बार करूँ बन्दना सत्गुरु चरनी माहीं,
'मंगत" सत्गुरु भेंट से फेर गर्भ नहीं आई !

प्रभु प्रायणता को अंतःकरण में नि:चल करने की तलकीन (प्रेरणा)

पत्र नं० 1

आज्ञाकारी सती सेवक हरजी राम जी !

आशीर्वाद पहुँचे ! ईश्वर सत श्रद्धा देवे । ईश्वर आज्ञा से तरणतारण पहुँच गए हैं। अपनी कुशल पत्रिका द्वारा बाबू अनन्तराम कुन्द्रा एडवोकेट तरनतारण जिला अमृतसर के पता लिखनी । समस्त कुन्बा (परिवार) को आशीर्वाद कहनी ।

प्रेमी जी, जो समय जीवन का बकाया है उस को सत सिमरण द्वारा नित्य ही निर्मल करते रहना । यह संसार अधिक कठिन है, इस में केवल प्रभु प्रायणता ही सर्व शक्ति के देने वाली है । इस जीवन में सत्य की तलाश और सत् में स्थिति हासिल करनी ही परम सिद्धी है । ईश्वर ही सत् विश्वास देवें और आन्तरिक भावना को पवित्र करें । जिस से सर्व शान्ति प्राप्त होवे । प्रेमी जी ! प्रभु इच्छया को धारण करके जो अनमोल पदार्थ प्रभु सिमरण प्राप्त हुआ है उसको अंत:करण में नि:चल करते रहना । ईश्वर सर्व मनोर्थ पूरण करें और सब कुन्बा व बच्चों को आशीर्वाद कहनी । ईश्वर नित ही सहायक होवे ।

(मंगतराम अज़ तरणतारण)

पत्र नं० - 2 (योग सम्बंधी)

आज्ञाकारी सती सेवक हरजी राम जी !
आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत श्रद्धा देवे। प्रेमी जी ! अभ्यास के लिये इन बातों को हर वक्त याद रखो :-

1.अभ्यास को कुवते - बरदाशत (सहन-शक्ति) के मुताबिक करें। यानी हर वक्त ख्याल को बेशक नाम सिमरण में लगाये रखें। मगर सुबह व शाम जो अभ्यास करें वह जितना तबीयत बरदाशत करे उतना ही करें। आइस्ता-आइस्ता तरक्की करें।

2. स्वास को ज्यादा रोकना नहीं बल्कि शान्ति से जितना आवे जावे उतना ही ठीक है। सिरफ नाम सिमरण को न भूलें। बहुत फाका (उपवास) भी नहीं चाहिए। बहुत जागना भी नहीं चाहिए। ऐसी एहत्यात (सावधानी) जरूरी रखा करें। आइस्ता-आइस्ता मन खुद बखुद (स्वयम्) आदी हो जायेगा। और शान्ति को पकड़ेगा। ईश्वर सत श्रद्धा देवें। बुद्धि प्रकाश करें। अपनी कुशल पत्रिका लिखते रहा करें। प्रेमी जी ! सत् विश्वास द्वारा जो अपने आप की उन्नति करता है वह आखिर सही शान्ति को प्राप्त होता है। नारायण सत् अनुराग देवे। दृढ़ निष्चय से मन को नाम सिमरण में लगाए रखें। हर वक्त हम को हृदय में देखें। ईश्वर निर्मल प्रेम देवे। तमाम कुन्बे को (समस्त परिवार) को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर नित ही सहायक होवें। वापसी कुशल पत्रिका लिखनी ज़रूरी।

(मंगतराम - अज़ तरनतारण)

पत्र नं० – 3

आज्ञाकारी सती सेवक हरजी राम जी !

आशीर्वाद पहुँचे, पत्र मिला। ईश्वर सत श्रद्धा देवे। तमाम परिवार को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर इच्छा से तुम्हारी इन्तज़ार काफी रही मगर प्रभु हुकम इधर तुम्हारे आने का न हुआ। आइन्दा (भविष्य में) प्रोग्राम थोड़ा-थोड़ा कभी किसी जगह कभी किसी जगह का होगा। अगर सम्मेलन प्रभु इच्छा से स्थान पर होना हुआ तो उस वक्त दर्शन हो सकते हैं। अगर प्रभु समय अनुकूल देवे तो पत्रिका द्वारा ही सत्संग का लाभ उठाते रहें। प्रभु निर्मल नाम की प्रतीत देवें।

स्थान पर सम्मेलन माह कार्तिक में कई सालों से होता आ रहा हैं। अब भी अगर वह समय अनुकूल हुआ तो दर्शन देने का विचार करना। खैर अभी समय काफी है। प्रोग्राम का भी कोई फैसला तो नहीं हुआ। देखिये मालिक की मौज क्या होती है। हर वक्त प्रभु सत् प्रायणता बख्शे। तमाम परिवार को दोबारा आशीर्वाद पहुँचे। आइंदा (भविष्य में) पत्रिका मार्फत पोस्ट मास्टर शाहपुर कन्डी, तहसील पठानकोट, ज़िला गुरदासपुर के पते पर लिखनी। ईश्वर शुद्ध आचरण की दृढ़ता बख्शे।

(मंगतराम अज़ शाहपुर कन्डी)

अन्तर्गति अभ्यास की विधि और नेहकरम गति

पत्र नं० – 4

ज़ैल में (नीचे) दिये गये पत्र में सत्गुरु देव श्री मंगतराम जी महाराज अंतर्गति अभ्यास के कुछ नुकतों पर प्रकाश डालते हुए न केवल अपने शिष्य की संशय निवृति करते हैं बल्कि नहकरम गति पर भी विचार प्रगट फरमाते हैं। साधना में आरुढ़ सज्जनों के लिए एक अमूल्य उपहार।

आज्ञाकारी सती सेवक हरजी राम जी !

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत् श्रद्धा देवे। तमाम कुन्बा (परिवार) को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर नित ही सहायक होवे। प्रेमी जी ! जो जो विचार लिखा है, उसका उत्तर लिखा जाता है। गौर करके अनुभव कर लेवें। और आइंदा के वास्ते चित्त में कोई शक्क धारण न करें अगर अपनी उन्नति करनी है तो। वाज़ा (स्पष्ट) होवे कि अंतर्गत अभ्यास से बुद्धि या मन एकाग्र होता है। और वासना रूपी अग्नि से निर्मल होता है, तब शान्त होकर अपने अन्तर विखे ब्रह्म नाद को अनुभव करता है। जो सरब का आदि मूल है।

1.प्राणों के साखी होने से तत सरूप में एकता पैदा होती है, यानी अबनाशी सरुप शब्द का बोध होता है।
2.प्राणों के साखी होने से इन्द्रियों का दमन कर सकता है।
3.प्राणों के साखी होने से वृति रहित अवस्था को प्राप्त होता है।
4. प्राणों के साखी होने से अपने आप में ज़ब्त को प्राप्त कर सकता है।
5. प्राणों के साखी होने से नेह करम सरुप आत्मा को अनुभव कर सकता है।
6. प्राणों के साखी होने से जीवन सरूप का बोध होता है जो सर्व प्रकाशी है।

आखरी सार निर्णय यह है कि बुद्धि जब तक प्राणों की साक्षी न होवे तब तक एकाग्र नहीं हो सकती है। जब तक एकाग्र न होवे तब तक अविनाशी तत्व का बोध नहीं हो सकता है जो अंतर विखे जाना जाता है। जो शरीर में व्यापक भी है और अलेप भी है। इस वास्ते तमाम शंकाओं को त्याग कर के इस अभ्यास में दृढ़ होते जाओ। जब अंत:करण की शुद्धि होवेगी तब उस परम तत्व का बोध होवेगा। और तब ही उपासना मुकम्मल होवेगी। ऋषि दयानन्द ने कोई नई बात नहीं कही है। वास्तव में उस पारब्रह्म की पूजा व अभ्यास करना चाहिये। जिस के जानने से सब कुछ जाना जाता है। जिस के जानने से सर्व सरूप वही दिखाई देता है। जिस के जानने से तमाम वासना और

कल्पणा नास हो जाती है। जिस के जानने से तमाम मालूमात पूर्ण हो जाती हैं। जिस के जानने से जानन पन मुकम्मल हो जाता है। ऐसा परम तत्व सर्व आद और सर्व प्रकाशी ब्रह्म सरूप को जानना ही असली ज्ञान है। अब जिस तरीके से बुद्धि एकाग्र होकर उस परम सरूप को अपने अंतर विखे-देख सकती है। वह तरी का तुम को समझाया है। उस में किसी किसम का भी शक धारण न करें। तब मन श्रद्धायुक्त हो कर अपने दोषों से निर्मल होकर उस साक्षी सरुप को अनुभव करेगा। प्रेमी जी ! इस विचार को अच्छी तरह समझाया गया था। फिर तुम को क्या शंका हुई है। अच्छी तरह से फिर समझ लेवें। कि मन और पवन की एकता से वृति का निरोध होता है। और वृति रहित हो कर अविनाशी शब्द को प्राप्त होता है जो हालत नेहकरम और निर्वास है। अभ्यास का सीखना महज़ (केवल) इतना ही समझें कि स्कूल में जैसे विद्या की खातिर दाखिल होता है। पूरण डिग्री तो किसी वक्त ही बड़ी से बड़ी कोशिश कर के प्राप्त होती है। इसी तरह परमार्थ का मार्ग है। अब जो कुछ कहा जाता है उस को परम श्रद्धा से धारण करें। ज़्यादा किताबों के हवाले छोड़ दें। जब ज़िन्दगी की किताबों और तमाम सिद्धों का राज़ तुम को समझाया गया है तो अपने आप को उस में लीन करें। तब देखें क्या हासिल होता है। यह तरीका ब्रह्म की उपासना का है। इस को सिद्ध गायत्री और अखण्ड गायत्री, अकथ कथा, अजपा जाप, अनन

भक्ति आदि नामों से सिद्धों नें विचार किया है। अब प्रेमी जी ! राई मात्र भी दिल में शक न रखें। अपने आप को ऐसी साधना में सावधान करें, तब उस परम तत्व को पा सकोगे। अब किताबों के हवाले की जरूरत नहीं। ज़िन्दा पुरुष तुम को समझाने वाला है। इसलिये नि:संशक होकर सत मार्ग में दृड़ हो जाओ। जिस से परम सिद्धि प्राप्त होवे। इस साधना की महिमा अपार है। थोड़ा सा विचार लिखा जाता है विचार कर लेवें। दूसरा जो नेहकरम गति का उत्तर पूछा है तो वाज़ा (स्पष्ट) होवे कि सत् करम करते जाओ और उस का नतीजा प्रभु आज्ञा में देखो। अपना दावा त्याग करो तब वासना की अग्नि ठण्डी हो जायेगी। और अंतर विखे नेहकरम सरूप आत्मा को जानोगे। निष्काम करम से बुद्धि निर्मल होती है। और अभ्यास में अधिक दृढ़ होती है। अभ्यास यानी सिमरण की दृढ़ता से असिमरत होकर यानी नेहचल होकर उस परम तत्व को प्राप्त हो सकती है। जो सरब आनन्द है। प्रेमी जी ! ट्रैक्टों में अच्छी तरह से नेहकरम गति का विचार किया हुआ है, उन के मुतालय (अध्ययन) से सब तसल्ली हो जायेगी और इस तरह जो शंका होवे उस का बोध कर लिया करें। ईश्वर सत् बुद्धि प्रकाश करें।

नीर मंजन से तन मल नासे, मन मल हरे संग पवना।

प्राण को पीवे गुर शब्द के संगा, तब परसे पद नेहगवना॥

पवन को पीवे शब्द जप जीवे, तब नासे भरम गुबारा।

अन्तर में अन्तर सुख पावे, घट देखे अलख अपारा॥

मार्ग गुप्त कोई गुरमुख बूझे, बिन रसना नाम कमाई।

"मंगत" दुबिधा दुर्मत नासे, घर निर्भय धाम लखाई॥

ईश्वर इच्छा से 3 बैसाख को तहसील पालमपुर की तरफ एक बीड़ नामी मकाम (स्थान) है वहां जावेंगे। अगर वह जगह एकान्त अनुकूल हुई तो दो माह तक शायद वहीं ही ठहरेंगे। अगर अनुकूलता हुई आप को मौका मिला तो दर्शन देने। वहाँ पहुँच कर सब हालात उस जगह और रास्ता का लिखा जावेगा, नहीं तो पत्रिका से ही लाभ उठावें। सूरजराम को आशीर्वाद पहुँचे। आइंदा (भविष्य में) कुशल पत्रिका मार्फत (द्वारा) लाला निहालचन्द, खास बीड़, डाकखाना बीड़, तहसील पालमपुर, जिला कांगड़ा के पते पर लिखनी। ईश्वर जीवन उन्नति की तड़प देवे। ताकि इस नाश्वान संसार में सत् प्राप्ति में सही अनुराग मिले। हर वक्त हम को हृदय में देखें। ईश्वर सत् भावना देवें। अपने प्रेमी वकील साहिब को भी आशीर्वाद। ईश्वर सत्मार्ग में प्रतीत देवें।

("मंगतराम" अज डेरा गोपीपुर)

ईश्वर परायणता और नाम सिमरण में
प्रेम से पापों का नाश

पत्र नं० - 5

आज्ञाकारी सती सेवक चौधरी हरजी राम जी !

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत् श्रद्धा देवे। तमाम कुन्बा (परिवार) को आशीर्वाद कहनी। प्रेमी बलवंतसिंह और सूरजा को आशीर्वाद पहुँचे। ईश्वर नित ही सत धर्म में नेह चल करें। ट्रैक्ट आप को पहुँच जावेंगे। प्रेमी को लिखा गया है। ईश्वर आज्ञा से यकम (पहली) अप्रैल को डेरा गोपीपुर जिला कांगड़ा की तरफ जा रहे हैं। वहाँ दो हफ्ते समय देकर शायद किसी एकांत जगह दूसरे हफता बैसाख में चले जावेंगे। गोपीपुर से ही मुकम्मिल प्रोग्राम बनेगा। अपनी कुशल पत्रिका मार्फत ला० शंकरदास अर्जी-नवीस डेरा गोपीपुर जिला कांगड़ा के लिखनी। ईश्वर नित ही सत् विश्वास देवे। हर वक्त नाम सिमरण में अपनी त्वजो (ध्यान) कायम करते रहें। इस धारणा से शान्ति प्राप्त होती है। यानी शान्ति भी अंदर है और अशान्ति भी अंदर से प्रकट होती है। इस वास्ते ईश्वर प्रायणता के नियम को दृढ़ करना और नाम सिमरण में अधिक प्रेम रखना ही सब तापों के नाश करने वाला है। जिस तरह प्रभु की सरब किरपा आप पर है, उसी तरह आप भी सरब कृपालू होकर एक प्रभु नाम

के परायण होवें। जिस से मानुष जनम सफल हो जावे। हर वक्त हमको हृदय में देखें। कुशल पत्रिका लिखते रहा करें। जिन्दगी की सही तहकीकात (खोज) ही मनुष जनम का मिशन है। आप प्रभु कृपा से ज़्यादा समय उस दीन दयाल के सिमरण ध्यान में लगाते रहें। जिस से और भी आनन्द प्राप्त हो जावे। ईश्वर गुरु बचन का विश्वास देवे। तुमाम कुन्बा को दोबारा आशीर्वाद कहनी। ईश्वर समता बुद्धि देवें। ईश्वर आज्ञा से 10 मार्च को लाहौर आये हैं और यकम (पहली) अप्रैल को डेरा गोपीपुर जायेंगे। आइंदा पत्रिका द्वारा सत् विचार हासिल करते रहें। ईश्वर सत् अनुराग देवे।

(मंगतराम अज लाहौर)

सम्मेलन हाज़री और गुरु बचन विश्वास की प्रेरणा

पत्र नं० - 6

आज्ञाकारी सती सेवक परसराम जी !

आशीर्वाद पहुँचे । पत्र मिला। ईश्वर सत् श्रद्धा देवे । ईश्वर इच्छा से सम्मेलन 4 कार्तिक बमुताबिक (तदानुसार) 20 अक्तूबर को मुकरर्र (निश्चत) हुआ है। 2, 3 कार्तिक को सत्संग होगा, 4 को आम लंगर होगा। इस वास्ते तुम ज़रूरी एक सप्ताह पहले दर्शन देने । इसी वास्ते पत्रिका पहले लिखी जाती है । अब के साल ज़रूरी संगत सेवा में हाज़िर होवें । ऐसे मौके दुर्लभ होते हैं। तुम ऐसे मौके पर छुट्टी आवें ताकि अपने इलाके के प्रेमियों को भी सम्मेलन हाजरी की तलकीन करें । वैसे इतलाह (सूचना) तो हमेशा दी जाती है । मगर हाजरी कम ही होती है। यह भी जिमेवारी तुम्हारे सिर पर है । वापसी अपने प्रोग्राम से मुतला (सूचित) करें । आजकल काला में आये हैं ओर शुरु असूज तक स्थान पर पहुँचेंगे । अपनी आमदन की इतलाह देनी । ईश्वर सत् श्रद्धा देवे । अपनी जिंदगी को नित काबल बनावें । हर वक्त गुरु बचन का विश्वास रखें । ईश्वर सत अनुराग देवें । (मंगतराम - अज़ काला गुजरां)

सच्ची खुशी की तालाश का आदेश

पत्र नं० - 7

आज्ञाकारी सती सेवक रतनचंद जी दौलतराम जी !

आशीर्वाद पहुँचे । पत्र मिला। ईश्वर सत् श्रद्धा देवे । तमाम कुन्बा (परिवार) को आशीर्वाद कहनी । तमाम संगत को आशीर्वाद पहुँचे । ईश्वर सत् अनुराग देवे । प्रेमी कर्मचंद जी ने दर्शन दिये और तमाम संगत के दर्शन हो गए। प्रेमी जी ! नित ही सच्ची खुशी तलाश करनी चाहिए। जो हर समय पूर्ण और गैर तबदील है । वह एक जीवन शक्ति आत्मा ही है। जब तक मन अंतर से दृढ़ विश्वासी उस मालके कुल का न होवे तब तक सही कदम जिन्दगी में उठाना और असली अंजामे जिदंगी (जीवन का परिणाम) को हासिल करना अति मुश्किल है। इसलिये अपने आप में पहले पवित्रता धारण करनी ही सरब उन्नति है। क्यों कि मन पवित्र होने से ही उच्च कारज करने के लिये दृढ़ हो जाता है । उच्च कारज वही होता है जो महज़ (केवल) प्रभु आज्ञा में निश्चित किया जावे और अपनी गर्ज को छोड़ कर बिलकुल सही फर्ज़ कर के अमल में लाया जावे । ऐसी धारणा ही सर्व कल्याण का स्वरूप है । ऐसा कारज करो जो तुम्हारी ज़िन्दगी और आखरत (अंतकाल) के लिये निर्भय खुशी के देने वाला होवे । ऐसा कारज करो जो तमाम दुनिया में सुख की रोशनी देने वाला होवे । ऐसा यत्न करो जिस से मन की नारवा (अनुचित) खुशियां

खत्म हो जायें और सही तसल्ली जीवन में हो जाये। ग़मी को हर वक्त नज़दीक कर के सही खुशी की तालाश करो यही सतपुरुषों के जीवन का राज़ है। हर वक्त आला हौसला (उत्तम उत्साह) होकर ज़िन्दगी के इंजामे-आला (उत्तम परिणम) की तहकीकात (तालाश) करें। यह जीवन विकारों के वास्ते नहीं है। बल्कि विकारों को जड़ से उखाड़ने के लिये है। प्रभु बुद्धि बल देवें। और गुरु बचन का विश्वास प्राप्त होवे। तमाम माताओं व बच्चों को आशीर्वाद कहनी। तमाम प्रेमियों को यह पत्रिका सुनानी और गाहे बगाहे पत्रिका द्वारा सत् उपदेश हासिल कर लिया करें। अपना प्रोग्राम दृढ़ करते रहें। मालिक की मौज सुख के देने वाली है। ईश्वर सत् अनुराग और गुरु भक्ति देवे। अपनी ज़िन्दगी एक निहायत पाकीज़ा (बहुत पवित्र) रुप में पेश करें। बड़ी ज़रूरत है इस वक्त पवित्र आचरण की। दुनिया में खुद ग़र्ज़ी और अति कामना का अंधकार छा रहा है। इस वास्ते कोशिश करो अपने आप को पवित्र करने की। प्रभु बुद्धि बल देवें। हर वक्त हम को हृदय में देखें। सब प्रेमी सत्मार्ग पर चल कर असली खुशी को हासिल करें। प्रभु सहायक होवें। अभ्यास जरूरी किया करें।

(मंगतराम अज़ समयाला)

समता ही असली खुशी है

पत्र नं० - 8

आज्ञाकारी सती सेवक रतनचंद जी !

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत् बुद्धि देवे। तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी। प्रेमी दौलतराम, ओमप्रकाश, ज्ञानचंद, कर्मचंद, बैजनाथ, छज्जूराम, अमरनाथ व दीगर (शेष) प्रेमियों को वाज़ा (स्पष्ट) होवे कि जो एकत्र हो कर सत् विचार किया है। ईश्वर तुम्हारे जीवन को बलवान करें। देश भक्ति और धर्म विश्वास देवें। प्रेमी जी ! जो काम दृढ़ निश्चय से किया जाता है उसका समर (फल) ज़रूरी लगता है। तुम जैसे नौजवान जिस बात पर आमादा (तत्पर) हो जावें, जरूरी कामयाबी हासिल करेंगे। इस भारतवर्ष की बिखरी हुई हालत ने सख्त मुसीबत में जन्ता को डाल रखा। ऐ इस भूमि के होनहार सपुत्रो ! तुम्हारा फर्ज़ है कि एकता की तालीम को खुद ग्रहण करना और दूसरे के कानों तक पहुँचाना। ज़माना बड़ा भयंकर आ रहा है। इस वास्ते ज़रूरी कुछ वक्त निकाल कर सत्संग में हाज़िर होकर अपने गुज़रे हुए बुजुर्गों का विचार किया करें और उन की कुर्बानी को मद्देनज़र (दृष्टिगोचर) रख कर अपने जीवन को भी देश और धर्म की खातिर बनाएं। तुमको सिर्फ सदाचारी जीवन और जन्ता के प्रेम पर ज़ोर देना है। अच्छे-अच्छे वाकयात (घटनाएं) सत्संग में विचार किया करें और कुछ वक्त नारायण

का सिमरण भी किया करें। जिस से बुद्धि बलवान होवे। अपने जीवन को नमूना बनाएँ। तब खुदबखुद (स्वयम् ही) लोग मुतासिर (प्रभावित) हो जायेंगे। समता का लिट्रेचर बेशुमार है, हर पहलू पर अच्छी तरह से तश्रीह (खोल कर बयान) की हुई है। खुद विचार भी किया करें। और दूसरों तक पहुँचाने की कोशिश करें। अगर पुस्तकों की जरूरत होवे तो मंगवा लिया करें। माताओं के अंदर भी इस तालीम का जजाबा प्रकट होवे, तब अच्छी तरह प्रगति हो सकती है। प्रेमी जीओ ! राम चंद्र, कृष्ण चंद्र, नानक, बुद्ध, ईसा आदि सब महात्माओं का मिशन समता ही है। मगर हिन्दू इस धर्म से बहुत दूर चले गए हैं। तुम को चाहिये फिर नये सिरे से उस को प्रकाश करें। तमाम जन्ता का मिशन समता ही हो जावे। इस संसार में आकर कुछ वक्त देश धर्म की उन्नति के लिये निकालना चाहिये। जिस जगह भी जाओ समता का प्रचार करो। और लोगों के टूटे हुए दिलों को टांका लगाओ। कोई फिर्का (मत) भी होवे उसको समता की तरफ रघबत दिलाओ। यही असली खुशी और भक्ति है। ईश्वर तमाम प्रेमियों को सत् विश्वास और बुद्धि बल देवे। हर वक्त हम को हृदय में देखें। पत्रिका लिखते रहा करें। तमाम दुरांगला संगत को आशीर्वाद कहनी।

(मंगतराम अज़ गोल्ड़ा)

समता की तालीम को अपना (धारण) कर देश और धर्म की जागृति करो

पत्र नं० - 9

आज्ञाकारी सती सेवक दौलतराम जी व समता समाज दोरांगला !

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत् बुद्धि देवे। तमाम संगत को एक-एक कर के आशीर्वाद कहनी। प्रेमी जी ! तुम अपने सत्संग का प्रोग्राम मुकम्मिल बनाए रखें। ईश्वर करें गे तो कामयाबी हो जायेगी। इस खतरनाक जमाने में ईश्वर ही हिन्दू कौम को जागृति देवें तुम जिधर भी जायें इन पुस्तकों का विचार किया करें। आइस्ता-आइस्ता सब ठीक हो जायेगा। रतनचंद, पं० गौरप्रसाद, बैजनाथ, ज्ञानचंद, बंसीलाल, छज्जूराम, अमरनाथ, कर्मचंद, ओमप्रकाश, मुन्शीराम व दीगर तमाम दोरांगला निवासियों को प्रेम पूर्वक आशीर्वाद कहनी। बहुत मुद्दत की हिन्दू कौम सोई हुई है। जल्दी जागना मुश्किल है। इतना जरूरी है कि तुम्हारे जैसे प्रेमियों की ज़िन्दगी कुर्बानी में आ गई तो ईश्वर सब सफलता बख्शेंगे। यहाँ घबराने का मकाम (जगह) नहीं है बल्कि प्रेम द्वारे सब की सेवा करके सब को ज़िन्दा करें। कई महात्माओं की ज़िन्दगियाँ तबाह हो गई हैं। अभी तक समता का जीवन प्रकट नहीं हुआ है। चालाकी और खुदगर्जी ने सब को घेरा हुआ है। इस का खिमयाज़ा (फल) उठा भी रहे हैं। मगर फिर भी जागृत को प्राप्त नहीं होते। इस का असली कारण यह

है कि असली तालीम खुदगर्ज़ आलमों (विद्वानों) ने अलोप कर दी है। जिस से जन्ता संश्य और वहमों में फंस कर असली पुरुषार्थ त्याग बैठी है। अब फिर कोशिश करते चलो। शायद दीनदयाल की कृपा से सूखी बेल हरी हो जावे। सत्संग में अच्छे - 2 वाक्यात का विचार किया करें। बिलकुल बेफिक्र रहें, ईश्वर तुम्हारी कुर्बानी को फल लगायेंगे। कोशिश करते चलो। ईश्वर सत् बुद्धि देवे। तुम प्रेमियों को देशधर्म की जागृति में कोशिश करनी चाहिए। हर वक्त हम को अपने हृदय में देखे। ईश्वर सत् श्रद्धा देवे। अनकरीब (निकट भविष्य) इलाका पूंछ में जाने वाले हैं। पत्रिका इसी पता पर लिख देनी पहुँच जावेगी। हर एक प्रेमी कभी-कभी कुशल पत्रिका लिखा करे। तमाम समता के लिट्रेचर का अच्छी तरह विचार किया करें। ईश्वर शान्ति देवेंगे। अपने तमाम कुन्बे (परिवार) को आशीर्वाद कहनी। हर वक्त मार्ग धर्म में दृढ रहो। जो आदमी खुद मुस्तकिल मिज़ाज (दृढ़ स्वभाव) वाला होता है वह दूसरों पर काबू पा जाता है। समता की तालीम एक समुद्र है, कोई आलम- फाजल (विद्वान) इन्कार नहीं कर सकता। उन को खुद पहले इस को अपनाना (धारण करना) है फिर दूसरों की सेवा करनी है। ईश्वर विश्वास देवे। हर वक्त सच्ची कोशिश धारण करो।

(मंगतराम - अज़ चनारी)

शब्द क्या है ?

पत्र नं० - 10

आज्ञाकारी सती सेवक, रतनचंद जी !

आर्शीवाद पहुँचे । पत्र मिला । ईश्वर नित् धर्म देवे । ईश्वर आज्ञा से गंगोठियां स्थान पर आ गए हैं। पता खास मौज़ा (गांव) गंगोठिया, डाकखाना चौक पंडोरी, तहसील कहोटा, जिला - रावलपिंडी, नाम लिख देना। जिस शब्द की दरयाफ्त लिखी है, उसका मुकम्मिल अर्थ किसी वक्त लिखकर रवाना किया जाएगा । शब्द की महिमा जो लिखी हुई है, उस शब्द के मानी (अर्थ) ब्रह्मनाद है। जो सर्वव्यापक है । ईश्वर को सर्व स्वरूप से ही पुकारा गया है। ज़िन्दगी का स्वरूप शब्द ही है । जो साकन अक्ल (समता बुद्धि) से मालूम होता है । जो अभ्यास तुमको बताया गया है वह ही शब्द प्राप्ति का ज़रिया (साधन) है। हर वक्त अभ्यास करते जाओ । जिस वक्त मन अंतर्मुख की तरफ राग़िब (लीन) हो जाएगा उस वक्त कालब (शरीर) के अंदर आवाज़ सुनाई देगी । नाभि से उठकर दिमाग में मर्कज़ (केन्द्र) बनेगा । दिमाग़ में जब शब्द की प्राप्ति होवेगी तब वह कामिल (पूर्ण) फकीर है । तमाम शब्द का ही विस्तार है । हर वक्त कोशिश करो प्राप्ति की । तमाम प्रेमियों को आर्शीवाद कहनी । अपने देश और धर्म के रक्षक बनो । दुरागंला कभी हाज़िर जरुर हुआ करो । धारीवाल में भी समता समाज के नियम जरुरी प्रचार

किया करें। ईश्वर सिमरण लोक सेवा आकबत (अंतकाल) का विचार करें। बुजुर्गों के जीवन का विचार - गुरु भक्ति इन नियमों को धारण करने की कोशिश करें। ईश्वर सत् बुद्धि देवे अपने जीवन सुधार की। शायद 15 दिन तक स्थान पर ठहरें फिर तप की खातिर बाहिर चले जावेंगे। ईश्वर तुमको परम सेवा देवे और हर वक्त हमको अपने हृदय में देखें। ईश्वर समतावादी बनावे।

(मंगतराम अज्ञ गंगोठियां)

मानसिक भाव को निर्मल करना ही असली शूरवीरता है।

पत्र नं० 11

आज्ञाकारी सती सेवक, रतनचंद जी !

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत् श्रद्धा देवे। तमाम संगत को आर्शीवाद कहनी। ईश्वर नित ही सत धर्म अनुराग देवे। प्रेमी जी ! रुहानी आज़ादी की तहकीकात (खोज) करें। वही समता का स्वरुप है। दुनिया में कई रंग के आन्दोलन आते रहते हैं मगर गुणी पुरुष अपनी जीवन यात्रा को प्रभु प्रायणता हासिल करके मुकम्मिल करने का यत्न करते हैं और आइन्दा के वास्ते एक आदर्श स्वरूप हो जाते हैं। प्रेमी जी ! अपने मानसिक भाव को निर्मल रखना ही असली शूरवीरता है। अभ्यास ज़रुरी किया करें। इससे बुद्धि बलवान होती है और पापों से मुखलसी (छुटकारा) हासिल करती है। तमाम प्रेमियों को एक एक करके आशीर्वाद कहनी। तमाम कुन्बे (परिवार) को आशीर्वाद कहनी। शुरु जौलाई तक किसी दूसरी जगह का प्रोग्राम मुकम्मिल होवेगा। अभी पता नहीं कि किधर प्रभु का हुक्म होता है। सत्संग का प्रेम बनाए रखें। इससे अक्सर प्रेम और एकता पैदा होती है। ज़माने की गर्दश खुदबखुद (स्वयं) सबक दे रही है और देवेगी। यह याद रखना चाहिए कि आखर सत् धर्म की ही विजय है। हर वक्त हमको हृदय में देखें। अपनी कुशल पत्रिका लिखते रहा करें। ईश्वर सत् बुद्धि देवें।

(मंगतराम अज़ समियाला)

गुरुदेव की अपने शिष्यों से तवक्को (उम्मीद)

पत्र नं० 12

आज्ञाकारी सती सेवक, दौलतराम व समता समाज दौरागंला !

आर्शीवाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर समता बुद्धि देवे। तमाम संगत को एक एक करके आशीर्वाद कहनी। प्रेमी जी ! समता की रोशनी को फैलाना तुम सब गुरमुखों का परम धर्म है। और हर वक्त हम को अपने हृदय में जानें। यह हर वक्त याद रखो कि तुम्हारा जीवन अपने देश और धर्म के लिये अति सुगंधित होवे। उम्मीद है कि तुम होनहार बच्चे अपनी सादतमंदी (श्रेष्ठता) का सबूत देवेंगे। ईश्वर आज्ञा से हम भी तुम्हारे जैसे सच्चाई के मुतलाशियों (जिज्ञासुओं) की खातिर घर घर फिर रहे हैं। जो कुछ हिदायत तुम को मिली है उस पर हर वक्त कार्बद (पाबंद) रहें। यह संसार एक बड़ा अंधकार है। इस वास्ते हर वक्त सत् असूल को धारण करते रहें। कुर्बानी से ज़िन्दगी मिलती है। तुम्हारी ज़िन्दगी बहुत ही कुर्बानी वाली चाहते हैं। इस वक्त ईर्ष्या द्वेष की आग प्रचन्ड हो रही है, इस को बुझाने के लिये समता की रोशनी तलूह (उदय) हुई है। तुम गुरुमुख ज़रुर इस रोशनी की किरणें बनकर अपने जीवन और देश को जरुरी प्रकाश करेंगें। हिन्दू कौम की बिखरी हालत को तुम ने टांका लगाना है। इस वास्ते महा कारज का बोझ तुम्हारे सिर पर है। हर घड़ी हर लम्ह अपनी इखलाकी ज़िन्दगी (जीवन चरित्र) का सुधार,

अपनी आत्मिक उन्नति रोज़ाना अभ्यास कर के प्राप्त करें। सत्संग एक जीवन है। राज, स्वराज की बुनियाद यह सत्संग ही है। हर वक्त तुम्हारे अन्दर यह तड़प होनी चाहिये कि तुम्हारे जीवन से लोगों को सुख मिले यह ईश्वर का हुक्म है। जो जीव परसुख और हित का विचार करता है, वह ही परम आनन्द को प्राप्त होता है। इस वास्ते हर वक्त कोशिश करो समता के मैराज (लक्ष्य) को हासिल करने की। समता आखरी मकाम है जहां यह जीव अपनी अनानियत (अहंकार) से मुखसली (छुटकारा) पा कर अपने निज स्वरुप में लीन हो जाता है। हर एक सोसाईटी को समता की तबलीख (हिदायत) करें और आपस की कश-मकश जुहलाना (ईर्ष्या) से मुखसली (छुटकारा) हासिल करें। प्रेमी जीयो ! तुम्हारी नेक सीरत हर वक्त चाहते हैं। तुम्हारे अंदर परोपकार और देश सेवा की तड़प चाहते हैं। तुम्हारे अंदर दुखियों के दुख का अहसास चाहते हैं। तुम्हारे अंदर एकता सत्संग चाहते हैं। तुम्हारे अंदर अपने सच्चे प्राचीन बुजुर्गों का आदर्श चाहते हैं। तुम्हारे अंदर समता के लामहदूद दायरे (असीम दायरा) की रोशनी चाहते हैं। तुम्हारे अंदर गुरुभक्ति और ईश्वर प्रायण जीवन चाहते हैं। क्या तुम सच्चे अधिकारी इस हमारी प्यास को पूरी करोगे ? जरुरी अगर तुमने अपना सच्चा रिफार्मर माना है तो। ज़रुरी अपनी कुर्बानी का सबूत देवें। ईश्वर तुम को सामर्थ्य देवे अपने जीवन को पवित्र

करने की । तमाम कुन्बा के (परिवार के) प्रेमियों को एक एक कर के आशीर्वाद कहनी। रतन चंद को धारीवाल आशीर्वाद कह भेजनी । ओमप्रकाश, कर्मचन्द, अमरनाथ, ज्ञानचंद, बैजनाथ, छज्जूराम, बंसीलाल, केशोराम, त्रिलोकनाथ, साईंदास, मुन्शीराम इत्यादि व दोगर तमाम कस्बे के बुजुर्गो बच्चों को आशीर्वाद कहनी । ईश्वर सबको सत्संग प्रीति बख्शे । दौलतराम यह पत्रिका सबको सुना देनी । गाहे बगाहे सत्संग की कार्यवाही लिखते रहना। प्रेमी जी बड़े होनहार हो । तुम्हारे से बड़े खुश ईश्वर तुम को बहुत सेवा का भाव बख्शे । और हर वक्त हम को अपने हृदय में समझें। जो उपदेश तुमने ग्रहण किया है उसको हर वक्त दृढ़ करें। इस दुनिया में बड़े आला मैराज (उत्तम लक्ष्य) को पाप्त कर पाओगे । अपने गुरु भाईयों से अधिक प्रीत करनी । और सब प्रेमियों की सेवा आपस में मिलकर के करनी। यह तुम्हारी अवल (पहली) ड्यूटी है । ईश्वर उस पर खुश होता है जो ईश्वर के नियम पालन करने वाला है । हर वक्त उस महाप्रभु के विश्वासी बने रहो । दुनिया में शान्ति को पाओगे । हम को दूर मत समझें बल्कि अपने हृदय में । और पत्रिका द्वारा आशीर्वाद हासिल करते रहें । तमाम संगत को दोबारा आशीर्वाद कहनी और सत्संग की दृढ़ता पकड़नी । ईश्वर सत् श्रद्धा देवे ।

(मंगतराम - अत जण्ड मेहलू)

ईश्वर प्रायणता का आदेश

पत्र नं० -13

आज्ञाकारी सती सेवक, उत्तमचंद जी !

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत् श्रद्धा देवे। तमाम परिवार को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर संकट के समय में गुरु बचन विश्वास बक्शे। हर वक्त सादगी, सेवा, सत्य, सत्संग और सत् सिमरण में दृढ़ता हासिल करें। मानुष जन्म का सही कर्तव्य पालन करने में नित ही प्रेम रखें। शारीरिक अवस्था अपनी नाश की तरफ जा रही है। इस वास्ते बड़ी से बड़ी कोशिश कर के ईश्वर प्रायणता हासिल करें। इससे मानसिक शान्ति प्राप्त हो सकेगी। अपनी कुशल पत्रिका लिखते रहा करें। अगले हफ्ते शायद दूसरी जगह जावेंगे। हमको अपने हृदय में देखें। मुकन्द लाल, सावनमल ने दर्शन दिए हैं। जो प्रेमी मिले तो आशीर्वाद कहनी। समता की रोशनी को समझें और चमकायें। महज (केवल) पशु जीवन से अपने आपको ऊँचा करें। यही उन्नति का सत् पुरुषार्थ है। ईश्वर बुद्धि प्रकाश करें।

(मंगतराम - अज़ जगाधरी)

पत्र नं० - 14

आज्ञाकारी सती सेवक, उत्तमचंद जी !

आशीर्वाद पहुँचे। ईश्वर सत् बुद्धि देवें। हर वक्त सत् विश्वास को धारण करके अपना जीवन व्यतीत करें। दुनिया में ऐसे हालात अक्सर (प्राय:) पैदा होते ही रहते हैं। ईश्वर सत् भावना देवें और सेहत मुकम्मिल बक्शें। अपनी कुशल पत्रिका लिखते रहा करें। प्रेमी जी ! ग्रंथ समता प्रकाश दस्ती तहरीर (हस्त लिखित) द्वारा छपवाया जाएगा। जब प्रेमियों को कुछ शक्ति हुई और समय अच्छा हुआ तो। ईश्वर की कृपालता सब प्रेमियों पर होवे और सरब शान्ति प्राप्त होवे। अभ्यास ज़रुरी किया करें। हर वक्त गुरु वचन विश्वास को दृढ़ करें। इस संसार में सत् धर्म के मार्ग पर चलें जिससे सरब शान्ति प्राप्त होवे। अभ्यास जरुरी किया करें। इससे मानसिक शान्ति प्राप्त होती है। ईश्वर सत् भाव प्रकाश करें।

(मंगतराम - अज्ञ मन्सूरी)

आश्रम सेवा सम्बंधी आदेश

पत्र नं० 15

आज्ञाकारी सती सेवक, उत्तमचंद जी !

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत् श्रद्धा देवे। तमाम परिवार को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर नित रक्षक होवे। प्रेमी जी ! ड्राफ्ट तुमने अभी किसलिए भेजा है। तुम से सिर्फ दरयाफ्त किया गया था कि ताजेवाला क्या प्रण पूरा कर सकेंगे। उस वक्त तो तुमने और विचार ज़ाहिर किया था। खैर अभी ज़मीन का सौदा हो रहा है। और कतैई (पूर्ण) फैसला नहीं हुआ है। डिप्टी कमिश्नर की मंजूरी के वास्ते कागज़ात गए हुए हैं। और हमारे नाम की जो वसूली ड्राफ्ट है वह भी हम बैंक में जा नहीं सकते हैं। इसलिए ड्राफ्ट फिलहाल वापस किया जाता है। जब कभी सेवा का मौका आया तो मुतला (सूचित) किया जाएगा। और जिसके नाम से रुपया मंगाना हुआ उसका अड्रैस दिया जावेगा। प्रेमी जी ! श्रद्धा की सेवा ही कल्याण के देने वाली है। तुमने खुद ताजेवाला में अपनी सेवा की तादाद (गिनती) दिखाई थी। अब शायद भूल गई होगी। अब भी यह रकम तुम्हारी तौफीक से शायद ज्यादा ही हो। इस वास्ते बरमौकया (समय पर) जैसा हुक्म होगा उसके मुताबिक अमल करना। दरयाफ्त करने (मालूम करने) का मतलब यह नहीं था कि तुम रुपया ही रवाना कर दो। प्रेमी ! सेवा से परम कल्याण प्राप्त होती है। इस वास्ते भयभीत नहीं होना चाहिए। और सब काम संगत के प्रभु आज्ञा अनुसार हो जायेंगे। तुमको कोई परेशानी चित्त में धारण नहीं करनी चाहिए। ईश्वर सत् बुद्धि विश्वास देवे। सब परिवार को दोबारा आशीर्वाद कहनी।

(मंगतराम अज़ शिमला)

आश्रम सम्बन्धी

पत्र नं० 16

आज्ञाकारी सती सेवक उत्तम चंद जी,

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर आनन्द देवें। तमाम परिवार को आशीर्वाद कहनी। प्रेमी जी ! तुम्हारी पत्रिका से सत प्रण का विचार पाया गया। प्रेमी जी ! अर्सा (समय) दो साल से संगत के प्रेमी आश्रम कायमी (स्थापना) के बारे में प्रार्थना करते रहे, मगर हालात जमाना अनुकूल न होने के कारण प्रभु इच्छा से बंदोबस्त न होने पाया। अब अर्सा (समय) 7 या 8 माह से एक टुकड़ा ज़मीन जो कि जगाधरी में मौजूद है, प्रेमी लेने के वास्ते विचार कर रहे हैं। और मालिक ज़मीन से फ्रोखतगी (बेचने) की दरख्वास्त (प्रार्थना पत्र) दिलवाई है। अभी डिप्टी कमिश्नर की अदालत में काग़ज़ आए हैं। देखिए प्रभु की क्या प्रेरणा होती है, क्योंकि जमीन की कीमत काफी बढ़ चुकी है और लेने वाले और भी ग्राहक बन गए थे। आखिर उस जमींदार को बढ़कर रकम देनी की है। तब उसने आश्रम के हक में बयान दिए हैं। ऐसा प्रेमी लोगों ने प्रबंध शुरु किया हुआ है। इन हालात के बमूजब (अनुसार) तुम भी इतलाह (सूचना) दी गई थी। इस आश्रम भूमि की खरीद के यज्ञ में क्या तुम भी कुछ आहुति डाल सकोगे। सो तुमने अपने विचार अनुकूल कुछ सेवा भेंट भेजी। फिर प्रभु इच्छा से वापिस कर दी गई। दोबारा पत्र द्वारा तुमने सब विचार ज़ाहिर किया, सो वाज़या होवे (ज्ञात हो) कि अगर ज़मीन का सौदा प्रभु इच्छा से होना हुआ तो फिर शायद तुमको भी सेवा का मौका (अवसर) मिल जावे। फिर जो

तुम्हारी श्रद्धा प्रेम हुआ उसके मुताबिक सेवा कर देनी। यह तो अपनी कल्याण है। प्रभु की अपार कृपा होवे तो इस जीवन यात्रा में सत् कर्म का मौक्या (अवसर) मिलता है। ईश्वर सत् विश्वास देवे। प्रेमी जी ! दोबारा ताकीद (किसी बात को ज़ोर देकर कहना) की जाती है कि घबराने की जरुरत नहीं है। इधर से तो परम अधिकारी जानकर इतलाह दी गई थी। अब उस पर अमल सही स्वरूप में करना तुम्हारी अपनी सत श्रद्धा है। इधर से तो परम अधिकारी जानकर इतलाह दी गई थी। अब उस पर अमल सही स्वरूप में करना तुम्हारी अपनी सत् श्रद्धा है। कोई डंड या मजबूरी नहीं है। ईश्वर निर्मल भावना देवे। तुम्हें सब हालात अनुकूल जो पत्रिका आवेगी और उधर से भी ज़मीन का कुछ फैसला हो जावेगा। फिर उसके मुताबिक प्रभु आज्ञा अनुसार तुमको सेवा वास्ते मुतला (सूचित) किया जावेगा। आगे जो इच्छा दीनदयाल की और तुम्हारी सत् श्रद्धा। ईश्वर सत् पुरुषार्थ में दृढ़ता बक्शे। हर वक्त प्रभु विश्वासी होकर सत् धर्म को ग्रहण करें। ईश्वर नित सहायक होवे। हर वक्त गुरु आशीर्वाद को अंगसंग जानें। प्रेमी जी ! प्रभु दरबार में कोई कमी नहीं है। सिर्फ अपना प्रण निर्मल भाव सहित धारण करना चाहिए। इस नाशवान संसार में ऐसी निर्मल भावना ही परम कल्याणकारी है। ईश्वर सत् बुद्धि प्रकाश देवें। प्रेमी जी ! आश्रम कायमी (स्थाप्ति) के भाव में जितनी भी प्रेमी कोई सेवा कर सके उतनी ही सफलता जानें। क्यों कि यह एक उत्तम कर्म है।

(मंगतराम - अज शिमला)

मानव जीवन में अपनाने योग्य खास हदायात (आदेश), सच्चा अधिकारी बनने का आदेश

पत्र नं० - 17

आज्ञाकारी सती सेवक रतन चंद जी व तमाम समता समाज दौरांगला !

आशीर्वाद पहुँचे। ईश्वर आज्ञा से आज काला पहुँच गए हैं। कल इस जगह से रवाना हो जावेंगे। क्योंकि उस जगह से प्रेमी लेने के वास्ते आज पहुँच गया है। आइंदा जो पत्रिका आवे मार्फत (द्वारा) सरदार तुलसासिंह बमकाम (गांव) जंड महलू, तेहसील गुजरखान, ज़िला रावलपिंडी के घर देनी। प्रेमी जी ! तमाम संगत को एक एक करके आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सबको सत्संग प्रीति बख्शे। हम को दूर न समझें। बल्कि अपने हृदय में हर वक्त समता के भाव को धारण करते रहें। दुनिया में परहित और परोपकार ही जीवन है। सो तुम तमाम प्रेमी सच्चे दिल से जगत सेवक बनने की कोशिश करते रहें। गुरु का आशीर्वाद तभी प्रफुल्लित होता है कि उनका बचन तन मन करके पालन करें। तुम्हारे जैसे सुपुत्र देश सेवा का भाव रखने वाले और हरेक के साथ सच्ची प्रीति रखने वाले, खोजते - खोजते तुम्हारे दौरांगला पहुँचे। जिससे कुछ प्रेमियों को हासिल पाया। कृपा करके अपने मन में जगह देनी और हर वक्त सत् वचन धारण करने की कोशिश करते रहना। सत्संग के हालात लिखते रहें। हमारी प्रसन्नता तभी हो सकती है : जब तुम प्रेमी सच्चे अधिकारी के स्वरूप में देखने में आओगे। प्रेमी जी ! तुम लोग बहुत खुशनसीब हो। जिससे उस उस्ताद की नज़र के नीचे आए हो जिसके अंदर

ईश्वर ने आकर खुद आगाही (प्रेरणा) तुम्हारी सेवा के वास्ते की। हर वक्त यह विश्वास घारण करें। किसी वक्त तुमको यह पता लगेगा कि हमारे रहबर (गुरु) का जीवन कैसा है। ईश्वर तुमको श्रद्धा देवें। तमाम संगत दोरांगला को दोबारा एक एक करके आशीर्वाद कहनी - मुताबिक सन्मुख के (जैसा कि सामने बैठकर)। ईश्वर सबको सतसेवा और मानुष जन्म की सफलता देवे और समता बुद्धि बख्शे। ईश्वर का निश्चय धारण करते रहें। यही परम खुशी है। प्रेमी दौलतराम, ज्ञानचंद, ओमप्रकाश, बैजनाथ, छज्जूराम, करम चंद, अमरनाथ व रत्न चंद तुम्हारे वास्ते खास हिदायत (शिक्षाएँ) यह हैं, इन पर पूरा अमल करना :-

1.. हर एक प्रेमी अपनी कुशल पत्रिका अलैहदा -2 (अलग- अलग) लिखा करे।

2. अभ्यास जरुरी किया करें।

3. सत्संग का नियम प्रकाश करने का यत्न करें।

4. समता की रोशनी को धारण करना और लोगों को आगाह (प्रेरणा) करना तुम्हारा पहला फर्ज़ है।

5. जो प्रश्न होवे पत्रिका द्वारा पूछ लिया करें।

6. तुम्हारा आपस में जीवन ऐसा होवे जैसे पानी और मछली।

7. हर एक प्रेमी सत नियमों को धारण करने का पूरा यत्न करे।

8. ख्वाहे (चाहे) कुछ भी होवे तुम समता धर्म के पालन करने वाले बनें।

9. अपनी ज़िन्दगी को एक नमूना बनाकर दिखाएँ।

10.तुम खुश किस्मत भी हो और बद किस्मत भी हो। खुश किस्मत इस वास्ते हो कि सही उस्ताद की पनाह (सच्चे गुरु की शरण) में आए हो। बद किस्मत इस वास्ते हो कि तुम्हारा इमतहान हर वक्त नए से नया होगा। ईश्वर तुमको सामर्थ्य देवे। तमाम नौजवान, वृद्ध माताओं, और बच्चों सबको आशीर्वाद कहनी एक एक करके। प्रेमी बंसी लाल, त्रिलोकनाथ, मनीराम - दीगर (शेष) प्रेमियों के नाम हमें याद नहीं, बल्कि श्रद्धा याद है। इस वास्ते उनको आशीर्वाद कहनी। और कभी - कभी पत्रिका द्वारा जरुरी दर्शन दिया करें। ईश्वर लोकसेवा और सत्संग प्रीति बख्शे। वापसी जवाब देना। ईश्वर तुमको श्रद्धा देवे।

आज्ञाकारी पंडित गौर प्रसाद जी !

आशीर्वाद पहुँचे। ईश्वर आप को सेवा भाव अधिक देवें। कभी कभी पत्रिका द्वारा आनन्दित भी किया करें। अपनी बहिन जी को आशीर्वाद कहनी। दूसरी माताओं को भी आशीर्वाद कहनी। तमाम कुन्बा (परिवार) को आशीर्वाद पहुँचे। रतनचंद जी यह पत्रिका सुनाकर हर एक को अपना अपना फर्ज जतला देना। वापसी पत्र भी लिखना।

(मंगतराम - अज जंड महलवां डाकखाना ऐन)

मार्फत सरदार तुलसासिंह, तहसील गुजरखाँ,

ज़िला रावलपिंडी (पाकिस्तान)

कर्तव्य पथ की याद

पत्र नं० 18

आज्ञाकारी सती सेवक रतन चंद व समता समाज दौरांगला !

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत श्रद्धा देवे। तमाम प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी एक एक करके। प्रेमी जी ! हमको अपने हृदय में ही समझें। जो सत उपदेश तुमने सुने हैं उनको अपने अमली जीवन में प्रकट करें। समता की रोशनी को फैलाने की कोशिश करें। जिससे ममता का अंधकार नाश हो जावे। बड़ी कुर्बानी की मंज़िल है। मगर आखिर समर (फल) हमेशा की खुशी है। यह संसार एक तिलिस्म (माया जाल) है। जब एक मर्कज़ (केन्द्र) का अकीदा (विश्वास) धारण न किया जावे तब तक ख्वाहिशात (इच्छाओं), लज़्ज़ात (मनोविनोद / स्वाद) और महसूसात (अनुभूतियों) की गृफ्तारी मौजूद रहती है। जो उस जीव को गहरा अज़ाब (दुख) है। इस अस्चर्ज अंधकार से छूटने के लिए जो रास्ता तुमने स्वीकार किया है वह ही आसान से आसान है। यानी दिन बदिन आत्मिक उन्नति करनी और लोक सेवा को धारण करना। परोपकार को धारण करने से खुदगर्जी जो गहरा अज़ाब (दुख) है नाश हो जाता है। प्रेम जो असली जीवन और खुशी है हासिल होता है। दुनिया एक कोशिश की जगह है। हर वक्त सत पुरुषार्थ धारण करके असली खुशी को हासिल करें। जो तुम्हारा असली स्वरूप है। तमाम कायनात एक आत्म शक्ति के इर्द गिर्द चक्कर लगा रही है। इस वास्ते उस चक्कर से खलासी पाने की खातिर मर्कज़ (केन्द्र) की तलाश करें। जो अभ्यास तुमको हासिल हुआ है। दीगर (शेष) तमाम कसबे के प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सबको समता बुद्धि देवे। तमाम शहर के निवासियों को

यह प्रार्थना करनी कि हमारा दर्शन हर वक्त अपने चरणों में ही करें। और सत्संग में एकत्र होकर ज़रुरी देश और धर्म की रक्षा का विचार करें। ईश्वर का हुक्म जो इस कालब से आ रहा है वह ही सेवा में अर्ज़ की जाती है। इसको धारण करके अपने जीवन को सफल कर लेवें। प्रेमी देसराज, मुन्शीराम, अमरनाथ, मंगतराम शाह, गौरी शाह, केशोराम, छांगा, साईंदास, पं० गौर प्रसाद और दीगर तमाम बुजुर्गों को आशीर्वाद कहनी और यह प्रार्थना करनी कि हर एक प्रेमी अपने जीवन का सुधार करे। सत सेवा को धारण करें हमारी यही भीख है और इसी से प्रसन्नता है। और आइंदा हाज़र कालब (मौजूदा शरीर का) दर्शन ईश्वर आज्ञा पर मुन्हसर (निर्भर) है। खबर नहीं एक पलक की। समता हिन्दू धर्म की जड़ है। इसको पूरा-पूरा पानी देवें। तब फिर सूखा हुआ द्रख्त समर (फल) लाएगा। ईश्वर सबको समता बुद्धि देवें। दोबारा आशीर्वाद पहुँचे। पत्रिका लिखते रहा करें। अगले हफ्ते में शायद इस जगह से चले जायेंगे। ईश्वर सतसेवा देवे।

(मंगतराम - अज़ जंड महलूवां)

आज्ञाकारी सती सेवक ओम प्रकाश जी !

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत श्रद्धा देवे और लोक सेवा बख्शे। तमाम प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी। हरबंससिंह व बीरसिंह को आशीर्वाद कहनी। तमाम दौरांगला कसबा को एक एक करके आशीर्वाद कहनी। सच्ची कोशिश करो अंजामेराहत (शान्ति का फल) पाओगे। ईश्वर आनन्द देवे।

(मंगतराम)

सत्धर्म प्रीति और लोक सेवा

पत्र नं० - 19

आज्ञाकारी सती सेवक रतन चंद जी !

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत् श्रद्धा देवे। तमाम प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी। प्रेमी दौलतराम, ज्ञानचंद, करमचंद, अमरनाथ, ओमप्रकाश, बैजनाथ, छज्जूराम, पं० गौर प्रशाद, मुन्शी राम व तमाम प्रेमी दौरांगला निवासियों को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सबको सतधर्म प्रीत देवें और लोकसेवा का भाव बक्शें। समता की जागृति में हर वक्त विचार दृढ़ करते रहें। यही आला मैराज (उत्तम लक्ष्य) और आनन्द है। जीव किसी हालत में भी तृप्त नहीं होता। ख्वाहे बड़े से बड़े ऐश्वरीय को क्यों न प्राप्त हो जावे। जब समता की तलाश शुरु की तब सब अनानियत जो दुखों का कारण है नाश हो जाती है। सब कुछ कुदरत ही कुदरत दिखाई देती है। ईश्वर दृढ़ निश्चय देवे। धर्म की पहचान धर्म के प्रचार में प्रोति देवे। वापसी कुशल पत्रिका लिखते रहा करें। तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी। पता खास सराय साला, ज़िला हज़ारा मार्फत चूनी लाल चोपड़ा के नाम लिख देना। दो हफ्ता तक शायद इस जगह ठहरें। फिर किसी दूसरी जगह जायेंगे। जो आज्ञा नारायण की। ईश्वर सत अनुराग देवे।

(मंगतराम - अज़ सराय साला)

लोक सेवा असली कल्याण

पत्र नं० - 20

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत बुद्धि देवे। सत्संग का हाल मालूम हुआ। आज जवाब दिया गया है। प्रेमी जी ! अपनी जिन्दगी को नमूना बनावें। संसार में आने का यथार्थ लाभ प्राप्त करें। ईश्वर सिमरण और लोक सेवा असली ज्ञान का मार्ग है। इस बिखरी हुई हालत को समता के धागे से परोने की कोशिश करें। सत् पुरुषों का यही जीवन है। तमाम संगत धारी वाल को आशीर्वाद कहनी। हर घड़ी सम्मेलन का विचार किया करें। दौरांगला के समता समाज को तरक्की देने की कोशिश करें। सत्संग का नियम दृढ़ करें। अपनी जरूरतों को कम करके दूसरों की सेवा में प्रवृत हो जाओ। बारीक बुनने की कोशिश करें। ईश्वर की प्राप्ति का मुख्य साधन निर्माणता है। शरीर नाश रूप है। आत्मा अविनाशी है। शरीर अभिमान से मुखलसी (छुटकारा) पाने से आत्मिक उन्नति होती है। आत्मिक उन्नति ही असली कोशिश है। असली खुशी है। असली अंजाम है। इस वास्ते हर वक्त अपने जीवन सुधार एकता प्रेम और पर सेवा को धारण करें। प्रेमी जी ! तुम खुश नसीब हो। तुम्हारे अंदर देश का दर्द है। जरूरी समता के भाव को प्रकाश करोगे। कोशिश करते जाओ ईश्वर नेक समर (फल) देवेंगे। दूसरी पत्रिका प्रेमी को दे देनी। सत्संग का प्रोग्राम दृढ़ करें। इस से बहतरी हो सकती है। वापसी जवाब दिया करें। ईश्वर परम आनन्द परोपकार बक्सें।

(मंगतराम - अज्ञ चनारी)

गुरु उपदेश द्वारा मान्सिक शान्ति हासिल करो

पत्र नं० - 21

आज्ञाकारी सती सेवक रतन चंद जी !

आशीर्वाद पहुँचे । पत्र मिला । ईश्वर सत श्रद्धा देवे । तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी । तमाम अपने कुन्बे को आशीर्वाद कहनी । प्रेमी पं० गौर प्रशाद जी, रतनचंद जी, दौलतराम, करमचंद, मुन्शी राम, बल्देव, त्रिलोक नाथ, अमरनाथ, ज्ञान चंद, देसराज, ओमप्रकाश, छज्जूराम, गौरी शंकर, बैजनाथ, चूनीलाल, मुनीलाल, प्रकाश, देसराज, मुलखराज, साईदास, मुन्शी राम, हर गोपाल, देसराज, हंसराज, केशोराम, व दीगर तमाम प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी । ईश्वर सतधर्म में प्रतीत देवे । प्रेमी जी ! हम को जुदा न समझें । बल्कि तुम्हारी सत् श्रद्धा से तुम्हारे हृदय में मौजूद हैं। प्रेमी जी ! तुम प्रेमियों को वाज़या (मालूम) होवे कि गुरु बचन को दृढ़ निश्चय से धारण करें । अपनी ज़िन्दगी को खुशगवार बनायें और दूसरों के लिए एक नमूना बन कर दिखलायें । इस वक्त धार्मिक सामाजिक उन्नति बिलकुल गुरुब (अस्त) हो गई है । तुम प्रेमियों को चाहिये कि बअसूल (नियमानुसार) जीवन बनाकर देश व धर्म की रक्षा करें । सत्संग का प्रोग्राम बहुत मुकम्मिल करें । और तमाम प्रेमियों को शामिल होने के लिये प्रेरणा करें । नहीं तो तुम प्रेमी ज़रुरी एक जीवन बनकर दिखलाएं। हर वक्त गुरु आशीर्वाद

से सफलता प्राप्त करें। शिष्यों का फर्ज़ है कि गुरु उपदेश को अपनाकर (धारण कर) मान्सिक शान्ति हासिल करनी। प्रेमी जी ! तुम होनहार हो। तुम से बहुत सी सेवा चाहते हैं बल्कि तुम्हारी सत् श्रद्धा से तुम्हारे हृदय में मौजूद हैं। ईश्वर तुम को निर्माण भाव और सत्सेवा का जीवन बक्शे। जो कि सदाचारी पुरुषों का लक्षण है। ज़रुरी अपने रहनुमा के दर्द को दिल में जगह देनी और सही मानों में अपना जीवन पेश करें। तुम्हारे सिर पर धर्म का बड़ा बोझ है। ईश्वर तुम को सत् बुद्धि देवे। हर वक्त बुलन्द ख्याली हासिल करें। वैर-बुग़्ज़ (ईर्ष्या-द्वेष) को मिटाने की कोशिश करें। हर एक से सांझ पैदा करें। ईश्वर विश्वास पूर्ण रखें। गुरु को हर वक्त सहायक देखें। प्रेमी जी ! अपने अंदर पवित्र जज़बा पैदा करना चाहिए। और बड़ी से बड़ी कोशिश कर के सत् असूलों को धारण करना चाहिए। अभ्यास जरुरी किया करें। इस से बुद्धि प्रकाश होती है। तमाम प्रेमी समता का जीवन हासिल करें। ईश्वर बल बुद्धि देवे। हर वक्त हम को हृदय में देखें। प्रोग्राम अभी इस जगह का है शायद एक हफ्ता तक। क्योंकि प्रेमी मजबूर कर रहे हैं। ईश्वर आज्ञा से जल्दी ही कहीं तप की खातिर एकान्त जगह में जायेंगे। चलती दफा मुतला (सूचना) कर दी जायेगी। ईश्वर सत् भावना देवे और गुरु बचन का अटल विश्वास बक्शे। हर वक्त नाम प्रीत बनी रहे।

(मंगतराम - अज़ काहनूवान)

समता का कोई प्रचारक नहीं,
पाखण्ड से बचने की चेतावनी

पत्र नं० - 22

आज्ञाकारी सती सेवक रतन चंद जी !

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत श्रद्धा देवे। प्रेमी ज्ञान चंद, (सब प्रेमियों के नाम लिखे हैं) को वाज़या होवे कि तुम सत्संग का प्रोग्राम मुकम्मिल बनाए रखें। यहतुम्हारा फर्ज है कि पहले खुद अपने आप को बनाना फिर दूसरों को आगाह करना (प्रेरणा करनी)। धर्म की पहली सीढ़ी इकट्ठा होना है। अगर तुम खुद ही एकत्र नहीं होते तो और लोगों पर क्या असर। वापसी अपनी-अपनी पत्रिका लिख कर पता देवें। प्रेमी जीओ ! तुम ने प्रतिज्ञा की हुई है। इस वास्ते अपने बचन की पालना करें और सत्संग की कार्यवाही जारी रखें। वापसी जवाब देना। दीगर स्वामी ज्ञानानन्द कोई समता समाज का प्रचारक नहीं है। यह खुद लोग रास्ते ढूँढते रहते हैं। लाहौर से शायद प्रेमी ने रवाना किये हों उन को भी काफी झाड़ पड़ी है। और ऐसे पाखंडी उपदेशकों का प्रचार मत सुनें। तुम हर किसम की हिदायत बज़रिया (द्वारा) पत्र ले सकते हो। समता नीति ट्रैक्ट के आखिर में धर्म उपदेशकों के जीवन का विचार किया हुआ है। उस को अच्छी तरह पढ़ें। अगर उस के मुताबिक कोई

उपदेशक होवे विचार सुनें। कोई उपदेशक समता समाज की तरफ से मुकर्रर नहीं हुआ और न ही इस काबिल कोई मालूम होता है। सब पाखंड का दौर चल रहा है। एक पैसा तक किसी उपदेशक को मत देवें। हम ने तो ज़िन्दगी खत्म कर दी है, मगर हमारी मौजूदगी में ही समता का नाम लेकर उगराही करे तो बिलकुल नामुमकिन (असम्भव) है। ऐसे आदमी को कान पकड़ कर गाँव से बाहर निकाल देवें। हम खुद जो सेवा कर रहे हैं और कई किसम का लिट्रेचर छप रहा है। दूसरे को क्या मजाल जो जेर-ज़बर कर सके। प्रेमी जी ! यह लोग ऐशो-इशरत का रास्ता ढूँढते रहते हैं। जिस जगह गया वहाँ वही रूप बना लिया। इन्हीं बेअसूल लोगों ने असली महात्माओं की कदर घटा दी। खैर ! इन बातों को हर वक्त याद रखो। हमारी पत्रिका में जो तहरीर होवे (लिखा होवे) उस पर अमल करे। और कोई प्रचारक हमारी इजाजत से नहीं आया है। तुम अपनी बहतरी लिट्रेचर से करें। हर एक बात का निर्णय हो चुका है। इन बनावटी फकीरों से जान छुड़ावें और लाहौर समता समाज से कोई चिट्ठी आवे तो हम को पहले मुतला (सूचित) करें। उस जगह समता की तालीम को अपनाने वाले नहीं हैं। ऐसा मालूम होता है। जिन्होंने ऐसा फ्रेबी आदमी प्रचारक रवाना किया है। तुम ताल्लुक हमारी जिन्दगी से रखो। जो बचन मिले उस पर अमल करो। इन सोसाइटियों के निज़ाम (शैली) कुछ खराब

हैं। इस वास्ते किसी समता समाज को एक कदम उठाने का इख्तयार नहीं है। सब कानून बंदी हो चुकी है। हर एक प्रेमी अपनी बहतरी करे और समता की तालीम को दूसरे कानों तक पहुंचाये। अगर किसी का जीवन बन गया तो अधिक लाभ होगा। प्रेमी रतनचंद किस जगह हैं। अर्सा से (काफी समय से) पत्र नहीं आया। तुम अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करते रहें। लोगों की अपनी किसमत। वापसी पत्र जल्दी लिखा करें। शायद नये ट्रैक्ट कर्म फिलासिफी के पहुँचे होंगे। समताधाम भी मिला होगा। उन का विचार करें। ईश्वर आनन्द देवे। हर वक्त अपने जीवन को मार्ग धर्म में चलाते रहें। इस संसार में आकर सही कोशिश से अपनी ज़िन्दगी बनायें। तमाम प्रेमियों को पत्रिका सुना देनी और वाज़या करना कि पत्र लिखें। अगले हफ्ता में इस जगह से शायद चले जावेंगे। ईश्वर आनन्द देवे।

(मंगतराम अज़ कठाला)

नोट :- कोई प्रचारक समता का नहीं है। और न किसी को उगराही देनी है और हमारी पत्रिका बगैर कोई कदम नहीं उठाना और धर्म पुस्तकों का विचार समता नीति से मुताला (अध्ययन) कर लेना और इन पाखंडियों की अच्छी तरह खबर गीरी करें। तुम्हारे पास हथियार मौजूद है। वापसी जवाब देना।

समता के असूलों पर कारबंद होने की तलकीन

पत्र नं० - 23

आज्ञाकारी सती सेवक रतन चंद जी !

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत शान्ति देवे। प्रेमी जी ! दुनिया में कोशिश सही से बड़ा आनन्द प्राप्त होता है। इस वक्त के जो नादार (दरिद्र) हालत हिन्दू कौम की है, इस को रोशन करना तुम्हारे जैसे सपुत्रों का काम है। प्रेमी जी ! समता की तालीम ईश्वर हुकम में प्रकट हुई है। इस वास्ते इस को तन-मन-धन कर के अपनाना ही कल्याणकारी है। ईश्वर सामर्थ्य देवे। तमाम संगत धारीवाल, दौरांगला को आशीर्वाद कहनी। पुस्तकें रहतयात (ध्यान पूर्वक) से तकसीम (बांटना) करना। जिस से रिकार्ड भी बचा रहे और संगत को भी फायदा बहुत पहुँचे। समता की लायब्रेरी दौरागंला में कायम कर देवें। जिस जगह से कोई अधिकारी प्रेमी तलब (मांगे) करे उस को दे देवें। और भी नई पुस्तक समता सार योग छपी है, वह कल भेजी जायेगी। लिट्रेचर की हिफाज़त करना ही तरक्की का मकाम है। हर वक्त सत्संग द्वारा समता का प्रचार करते रहें। इससे जनता को रम आनन्द प्राप्त होवेगा। नित्य हम को हृदय में समझें। प्रेमी जी ! इन बातों को हर वक्त याद रखें। समता के असूलों पर खुद चलने की कोशिश करें दूसरों को आगाह (प्रेरणा) करें। कभी-कभी बड़ा सत्संग किया करें और संगत को प्रचार कर के सुख दिया करें। और भी कोई प्रेमी इस लायक होवे तो उस को पुस्तकों द्वारा लाभ देकर समता का सेवादार

बनावें। इस दुनिया में कुछ फर्ज के वास्ते यह जीव आया है। पहले खुद नेक रास्ते पर चलना फिर दूसरों की सेवा करनी। प्रेमी जी ! यह वक्त बड़ी जद्दोजहद (दौड़ धूप) का है। जिस से अपनी जिन्दगी को कामयाब बनावें। देश भक्ति का सबूत देवें। अपने पिता जी को आशीर्वाद कहनी। तमाम संगत धारीवाल, दौरांगला को आशीर्वाद कहनी। असली खुशी हासिल करो। दूसरों की सेवा करके असली बंदगी प्राप्त करो। गुरु के बचन पर चल करके असली कमाल की हर वक्त तलाश करें जो इस मनुष्य ज़िन्दगी का लुबेलुबाब है। पुस्तकों को अच्छी तरह से विचार किया करें। इस विचार से तमाम वहमात दूर हो जायेंगे। वाणी बड़ी दिलकश है। इस की मुनादी ज़रूर करें। जिस से लाभ प्राप्त हो। इतना लिट्रेचर जनता उन्नति के लिये है। इस लिये अधिकारी होकर इस को जागृत करें। हर वक्त प्रेम पूर्वक अपना जीवन बनायें। अभ्यास जरुर किया करें। ईश्वर अधिक सेवा भाव बक्शे। हम को हर वक्त अपने हृदय में देखें। ईश्वर आज्ञा से 24 अषाढ़ को जंगल से उतर कर चुनारी दो चार दिन ठहरेंगे। फिर जिधर नारायण का हुकम। पत्रिका लिखते रहा करें। तमाम संगत को दोबारा आशीर्वाद कहना। हर वक्त कोशिश करो नेक बनने की। हर वक्त देश भक्ति का सबूत देवें। प्रेमी जी ! जवानमर्द बनने की कोशिश करें। मनुष्य ज़िन्दगी को सफल करो देश सेवा करके। ईश्वर सत् बुद्धि देवे। अपने तमाम कुन्बे (परिवार) को आशीर्वाद कहनी।

(मंगतराम अज़ सरुपा जंगल बजरीया (द्वारा) चनारी)

आश्रम सेवा की प्रेरणा

पत्र नं० - 24

आज्ञाकारी सती सेवक परस राम जी !

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत बुद्धि देवे। ईश्वर इच्छा से कल दूसरी जगह जा रहे हैं। और फिर जल्दी ही और किसी जगह शायद चले जावेंगे। इस वास्ते अगर तुम ने अपनी सेवा को पूर्ण करना है तो बाबू अमोलक राम को अर्साल कर देनी (भेज देनी) हमारा एक जगह ठिकाना नहीं है। रावलपिण्डी जगह के बारे में प्रेमी बज़रीया (द्वारा) दलाल अराज़ी (ज़मीनों के दलाल) लेने की कोशिश कर रहे हैं। देखिये ईश्वर की क्या इच्छा होती है। अपनी कुशल पत्रिका लिखते रहा करें। हर वक्त हम को हृदय में देखें। प्रभु तुम को कामयाब करें और गुरु बचन का विश्वास देवें।

(मंगतराम - अज़ झंग-मघयाना)

विचारों की भिन्नता में बाद मुबाद की बंदिश - बर्दाश्त का मादा पैदा करें !

पत्र नं० - 25

आज्ञाकारी सती सेवक रतनचन्द जी व समस्त समता समाज दौरांगला !

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत श्रद्धा देवे। तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी। प्रेमी जी ! विचार किसी को समझ में न आवे, उस पर ज़्यादा बाद मुबाद नहीं करना चाहिए। तुम्हारे वास्ते मुख्य साधन सादगी, सेवा, सत्य, सत्संग और सत् सिमरण ही हैं। आपस में प्रेम करें। सहन शक्ति पैदा करें। तुम्हारी सच्ची कुर्बानी के बगैर धर्म की जागृति नहीं हो सकेगी। प्रेमी त्रिलोक नाथ पर ईश्वर कृपा करें। और आइंदा के वास्ते ज़ब्त (सहनशीलता) देवें। वापसी सब हालात लिखना। अनकरीब (निकट भविष्य में) इस जगह से जाने वाले हैं। सतसंग हाल का काम शुरु है। एक माह तक शायद पूरा हो जाएगा। तमाम प्रेमियों को एक एक करके आशीर्वाद कहनी। हर वक्त समता के प्रेमियों को बरदाश्त करनी चाहिए। जुल्म का इन्सदाद (खात्मा) प्रेम से होता है। हर- दिल-अज़ीज़ (सर्वप्रिय) होवें। किसी पर नाजायज़ ज़ब (जबरदस्ती) बिलकुल नहीं करना चाहिए। प्रेम से सब काम को सरइंजाम (पूरा) करें। ईश्वर सतबुद्धि देवे। अपनी कुशल पत्रिका लिखते रहा करें। बाकी समता समाज के प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सतबुद्धि देवें।

(मंगतराम अज़ गंगोठियां)

ज़िन्दगी को धर्म का सिपाही बनाओ

पत्र नं० - 26

आज्ञाकारी सती सेवक दौलतराम, ओमप्रकाश जी !

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर तुम को सत श्रद्धा देवे। प्रेमी करमचंद, ज्ञानचंद, रतनचंद, अमरनाथ, बैजनाथ, छज्जूराम, बंसीलाल, के शोराम, छांगामल, देसराज, पं० गौरप्रसाद, हंसराज, हरगोपाल, मुंशीराम, साईदास, मुंशीराम सराफ, गोधाराम, अमरनाथ शाह, मंगतरामशाह, दौलतराम, खुशनवीस प्रेमी और हरएक छोटे बड़े माई भाई बच्चों को आशर्वाद कहनी। प्रेम सबका हृदय में है। मगर नाम की अक्सर वाकफीयत नहीं है। इस वास्ते तुम्हारा फर्ज़ है सबको आशीर्वाद सुनानी। प्रेमी जी ! समता की रोशनी को प्रज्वलित करना तुम्हारा प्रथम धर्म है। समता के दो असूल हैं उनको पहले खुद धारण करें फिर दूसरों को प्रेमपूर्वक समझाएँ। जिससे शान्ति सबको प्राप्त होवे। इस वक्त हालत जमाना नाजुक है। धर्म का प्रचार ज़रुरी सत्संग द्वारा किया करें। अपनी ज़िन्दगी को हर पहलू से प्रेम वाली बनावें। दुख को बरदाश्त करने वाला जीवन बनावें। दुख से असल सुख मिलता है। ज़िन्दगी जो असल मसनूई (मिथ्या) है। यही कैदखाना है। हर वक्त अपने ख्याल को बशाश (प्रसन्न) बनावें। ईश्वर की आज्ञा में दृढ़ निश्चय धारण करें।

देश सेवक बनें। अपने अंदर ऐसी प्रेम की धारणा पैदा करें जिससे तुम्हारी जिन्दगी से खुद का और दूसरों का भला होवे। पुस्तकें विचार किया करें। ईश्वर की आज्ञा से एक माह से जंगल में स्थित हैं। मालिक जीवों को शान्ति देवे और सबमें समता धर्म का विश्वास प्रघट होवे। ओमप्रकाश जी पत्रिका लिखा करो। तमाम प्रेमी सत्संग द्वारा जरुर एकत्र हुआ करो। अपनी ज़िन्दगी को धर्म का सिपाही बनाओ। इस दुनिया में आने का फल यही है कि असल खुशी नसीब होवे। सो असली खुशी मार्ग धर्म में है। ईश्वर निश्चय देवें। सबको सत् प्रेम मिले।

(मंगतराम अज़ सरुपा जंगल)

बगैर अमली जीवन के
असली खुशी प्राप्त नहीं हो सकती

पत्र नं० - 27

आज्ञाकारी सती सेवक रतनचंद जी !

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत श्रद्धा देवे। तमाम प्रेमियों को एक एक करके आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सत् धर्म प्रीत देवे। प्रेमी जी अपने निश्चय को पूर्ण दृढ़ रखना चाहिए। इसी में कामयाबी है। कल इस जगह संगत ने यज्ञ किया है। और बुद्धवार को इस जगह से नज़दीक ही दूसरी जगह जाएँगे। पत्रिका इसी पते पर लिखनी। ईश्वर सबको आनन्द देवे। प्रेमी जी अंधकार बहुत है। धर्म की तरफ लोगों की बिलकुल रुचि नहीं है। प्रचार सुनकर लोगों को काफी तसल्ली आ रही है। अब बगैर अमली जीवन के असली खुशी हासिल नहीं होती। हर वक्त कोशिश करते रहें। कुछ भला ही होवेगा। प्रेमी दौलतराम, ज्ञानचंद, छज्जूराम, करमचंद, बैजनाथ, अमरनाथ, ओमप्रकाश, गौरप्रसाद, मुन्शीराम, गोपालदास, अमरशाह, साईंदास वगैरा सबको एक एक करके आशीर्वाद कहनी। प्रेमी जी ! ज़िन्दगी को कुर्बानी के स्वरूप में पेश करते रहा करें। इसी से लोगों के दिलों में धर्म का जज़बा बढ़ेगा। ईश्वर सत् बुद्धि देवे। सत्संग का प्रोग्राम बनाए रखना। पत्रिका लिखते रहा करें।

(मंगतराम अज सराय सालह)

(इरादे की दृढ़ता)
साबत कदमी से जीवन का
सही मकसद प्राप्त होता है।

पत्र नं० - 28

आज्ञाकारी सती सेवक रतनचंद जी व दौलतराम जी !

आशीर्वाद पहुँचे। तमाम कुन्बे को आशीर्वाद कहनी। संगत को एक एक करके आशीर्वाद कहनी। ईश्वर नित ही सत् अनुभव बक्शे। सम्मेलन की मुकरर्री (निश्चित) तारीख 20 अक्तूबर को हुई है। 17 को हाज़री होनी चाहिये। आगे भी लिखा गया है। अपने प्रोग्राम से पता देना। जिन्दगी का मुद्दा (मकसद) यह ही है। अपने आप में जज़बात कुर्बानी पैदा कर के देश धर्म के वास्ते रोशन चराग बनें। हर वक्त नापायदार (क्षण भंगुर) खुशी का त्याग करके असली ग़मी को दिल में जगह दे कर जीवन आनन्द की तहकीकात करें। यह मानुष जनम दुर्लभ है। ज़िन्दगी का मैयार (कसौटी) बहुत बुलन्द है। सिसकने से कुछ नहीं बन सकेगा। बल्कि साबत कदम (दृढ़ विश्वासी) हो कर अपने सही मकसद को हासिल करें। ईश्वर सत् बुद्धि देवे। तमाम संगत को दोबारा आशीर्वाद कहनी। सम्मेलन में हाजिर होकर अधिक शारीरिक सेवा का सबूत देवे। ईश्वर सत् बुद्धि देवे। यह मौकया इम्तहान के होते हैं। बच्चों वाला ख्याल तर्क

(छोड़) कर देवें। अमल के मैदान में अपने आप को खड़ा करें। तमाम प्रेमियों को सही भाव से वाज़या कर देवें। ईश्वर आज्ञा से आज रावलपिन्डी आये हैं। और दो दिन के बाद गंगोठियां चले जायेंगे। आइंदा पत्रिका गंगोठियां में लिखनी। ईश्वर गुरु बचन का विश्वास देवे। तमाम दीगर (अन्य) दौरांगला की संगत को एक-एक करके आशीर्वाद कहनी और साथ और प्रेमियों को भी लाना। ईश्वर सत् श्रद्धा देवे।

(मंगतराम अज़ रावल पिण्डी)

जिम्मावार ज़िन्दगी का एहसास

पत्र नं० - 29

आज्ञाकारी सती सेवक दौलतराम जी !

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत् बद्धि देवे। तुम्हारी पत्रिका गंगोठियां से चलते वक्त मिली। उस वक्त जवाब दिया गया। कोई बड़ी बात नहीं अगर चिट्ठी नहीं मिली तो। आइंदा ज़रुरी जवाब दिया करें। तुम्हारी ज़िन्दगी ज़िम्मेवारी वाली है। देश सेवा और धर्म रख्या का विचार करें। हर वक्त अपनी ज़िन्दगी को नुमूना बनावें। हम को अपने हृदय में देखें। तुम्हारे लिफाफे का जवाब दिया गया है। अपने तमाम कुन्बे को आशीर्वाद कहनी। तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी। अपने तमाम गुरभाईयों को आशीर्वाद कहनी। और वाज़या (प्रेरणा) करनी कि कभी-कभी पत्र लिखा करें। प्रेमी जी ! तुम को होनहार और सदाचारी देखा है। ज़रुरी अपनी ज़िन्दगी के बोझ को उतारोगे। तमाम समता प्रेमियों को ईश्वर समता नसीब करें। वापसी जवाब देना। शायद एक हफ्ता तक यहां ठहरेंगे। जरुरी अभ्यास किया करें और पुस्तकों का मुतालया (अध्ययन) किया करें। सत्संग को तरक्की देवें। ईश्वर सत् बुद्धि देवे।

(मंगतराम अज़ चुनारी)

आज्ञाकारी सती सेवक अमरनाथ जी !

आशीर्वाद पहुँचे। रतनचंद की चिट्ठी से मालूम हुआ है कि राम नाथ बैजनाथ की सेहत खराब हो रही है। ईश्वर शान्ति देवे। पत्रिका लिखा करो।

(मंगतराम अज़ चुनारी)

असली ज़िन्दगी सत् की तलाश है।

पत्र नं० - 30

आज्ञाकारी सती सेवक रतनचंद जी, दौलतराम जी व तमाम संगत दौरांगला निवासी !

आशीर्वाद पहुँ चे। पत्र मिले। ईश्वर सत् बुद्धि देवे। तमाम संगत को एक एक करके आशीर्वाद कहनी। ईश्वर आज्ञा से 2 जनवरी को गोलड़ा आ गये हैं। इस वास्ते इस पता पर पत्र लिखना। खास गोलड़ा शरीफ मार्फत हकीम दुनीचंद, डाकखाना ऐजन, जिला रावलपिण्डी नाम लिख देना। प्रेमी जी ! सत्संग का जरूरी प्रोग्राम मुकम्मिल करना और लोगों को प्रेरणा करते रहना। इस से कल्याण होवे गी और हर वक्त हम को हृदय में देखें। हर वक्त धर्म मार्ग में तरक्की करें। इस ज़िन्दगी का लाभ यही है। और अपनी कुशलपत्रिका लिखते रहा करें। प्रेमी जी ! हर वक्त अपनी ज़िन्दगी को नमूना बनावें। समता जो असली हिन्दू फलसफा है उस को खुद अपनाएँ और दूसरों तक वाज़या (प्रेरणा) करें और अभ्यास ज़रूरी किया करें। असल ज़िन्दगी सत की तालाश है। इस वास्ते कोशिश करते चलो। मालिक सुख देवेगा। अपनी जिम्मावारी से सबकदोश (ज़िम्मेवारी से मुक्त) तुम तब ही हो सकते हो जब अपने जीवन को सही मानों में गुरु वचन में मुस्तगर्क (लीन) करो। ईश्वर श्रद्धा और समर्थ्य देवे। हर वक्त सत् अनुराग बना रहे। तमाम संगत को दोबारा आशीर्वाद कहनी। तमाम प्रेमियों को कहना कि कभी पत्र लिखें।

(मंगतराम - अज़ गोलड़ा शरीफ जिला, रावलपिण्डी)

अपने जायज़ (उचित) फर्ज़ को समझ लेने से अशान्ति नाश

पत्र नं० - 31

आज्ञाकारी सती सेवक रतनचंद जी !

आशीर्वाद पहुँचे । पत्र मिला। ईश्वर सत् बुद्धि देवे । हर वक्त समता के प्रचार की कोशिश करनी । इस वक्त दुनियां की शान्ति इसी ही तरीके से हो सकती है। ईश्वर का हुकम ही ऐसा है । प्रेमी जी ! अगर एक इन्सान अपने जायज़ फर्ज को समझ लेवे तो फिर अशान्ति नाश हो जाती है। मगर खुदगर्जी के दामन (चुंगल) में आकर हर एक जीव धर्म से पतित हो जाता है । तब दुनिया में अशान्ति फैल जाती है । गुणी पुरुष अपने जायज़ फर्ज़ । को समझ कर अपने जीवन को रास्ती (सच्चाई) की तरफ राग़ब करते हैं और लोगों की भी सेवा करते हैं। ऐसा ही निश्चय तुम को होना चाहिए । तमाम धारीवाल के प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी । दौरांगला की संगत को आशीर्वाद कहनी । कोई पत्र उनका नहीं आया । दौलतराम को वाज़या कर देवें । कि तुम पत्रिका द्वारे आशीर्वाद हासिल नहीं कर सकते तो और क्या कामयाबी करोगे । तमाम दौरांगला संगत को एक-एक कर के आशीर्वाद कहनी । ईश्वर सब को सत् बुद्धि देवे । प्रेमी जी ! ऐसा निश्चय हर वक्त धारण करें । गुरु वचन की पालना करनी । सत्संग प्रीति, परोपकार सेवन, आत्मिक उन्नति की खातिर रोज़ाना अभ्यास करना । तुम्हारी श्रद्धा तुम को अधिक प्रताप देवे । जिस से दुनिया में एक अस्चर्ज जीवन को धारण करें । यह संसार मन की कल्पना में स्थित है। इस वास्ते जिस की कल्पना

शुद्ध है उस को हर पहलू से राहत नसीब होती (हर तरफ से शान्ति मिलती) है। बहुत सी देश सेवा तुम्हारे सिर पर है। हर वक्त कोशिश रास्ती (सच्चाई) की करें। अपने तमाम गुरभाईयों को तन्बीह (चेतावनी) करनी कि तुम लोगों ने एक मुश्किल जीवन वाले के साथ तुअल्लकात (सम्बंध) पैदा किया है। अब सोने का वक्त नहीं बल्कि जागने का वक्त है। सत्संग की प्रोति पैदा करो। तुम्हारी ज़िन्दगी बहुत सी कुर्बानी वाली चाहते हैं। ईश्वर विश्वास लोक सेवा और मौत की याद को कभी न भूलना। प्रेमी जी ! धर्म के रख्यक और देश सेवक बनो। तमाम दौरांगला संगत को एक-एक कर के आशीर्वाद कहनी। दौलतराम अगर चिट्ठी लिखने से तक्लीफ महसूस करता है। तो सब की कुशलता सिरफ लिख कर भेज दिया करें। यह वाज़या कर देना। अभी तो तुम भूले हुए हो। तुम ने अपनी ज़िन्दगी की बागडोर एक मुसाफिर के हाथ दी है। अब मुश्किल को बरदाशत करो पहले विचार कर लेना चाहिए था। अब जिस मैदान समता की तरफ आये हो। उस में मर मिटो। तब अबद हयाती (लम्बी आयु) को पाओगे। ईश्वर समर्थ्य देवे। सत् बुद्धि देवे। बनारसी दास को हिदायत पहले की गई है। कि वह चिट्ठी लिखेगा और पुस्तकें भी रवाना करेगा। दीवानसिंह इस जगह मौजूद है। तमाम संगत को ब्रह्म सत्यम् प्रेम पूर्वक कहना। शायद संगत चुनारी की मजबूरी से उधर जाना पड़े। खैर पत्र जरूरी लिख दिया करें। ईश्वर सत् विश्वास देवे। अपने तमाम कुन्बा को आशीर्वाद कहनी।

(मंगतराम - अज़ गंगोठियां)

समता के बाल मैम्बरों का धर्म

पत्र नं० - 32

आज्ञाकारी सती सेवक चमनलाल व बाल समता समाज दौरांगला !

आशीर्वाद पहुँचे। ईश्वर तुम्हारे अंदर धर्म का जज़वा पैदा करें। तुम बच्चों ने ही देश और धर्म की रख्या करनी है। तमाम संगत को आशीर्वाद पहुँचे। तमाम बच्चों को वाज़या (विदित) होवे कि बुजुर्गों के सत्संग में शामिल हुआ करें और रतन चंद सैक्टरी की हिदायत मुताबिक कार्यवाही किया करें। तमाम बच्चों को महामंत्र, मंगलाचरण, आरती और समता मंगल याद होना चाहिए। और हर एक बाल समता समाज का मैम्बर सुबह पवित्र होकर 25 मिनिट तक महामंत्र का जाप दिल में किया करें। फिर और कार्यवाही करनी। प्रभु सिमरण से बुद्धि तेज़ होती है। असली सुख प्राप्त होता है। मनुष्शी चीज़ और मांस से परहेज़ करना हर एक मैम्बर का फर्ज है। ईश्वर तुम को अधिक प्रेम और श्रद्धा देवे। हर एक सत्संग में हाज़िर हुआ करें। तुम बज़्ज़ाते खुद (स्वयं) तरक्की नहीं कर सकते हो। जब तक कि बुजुर्गों की संगत में हाजिर न हों। जो पुस्तक तुम पढ़ सकते हो, वह ले सकते हो। मगर मतलब तुम अभी नहीं निकाल सकते हो। इस वास्ते खुद भी मुतालया (अध्ययन) करें और बुजुर्गों से सुनें भी। तुम्हारे वास्ते यही बड़ी भक्ति है कि सदाचारी जीवन धारण करें। आपस में एकत्र होकर बैठें और महा मंत्र का जाप किया करें। पुस्तकों से हर एक प्रेमी नकल कर के पास रख लेवे और याद कर लेवे। महा मंत्र (समता स्थिति योग) में है। आरती और समता मंगल (समता सार योग) के आखिर में। ईश्वर पवित्र जीवन बक्शें। अपना पत्र लिखा करें।

(मंगतराम अज़ काहनूवान)

बच्चों को सही हिदायत का आदेश

पत्र नं० - 33

आज्ञाकारी सती सेवक रतनचंद जी !

आशीर्वाद पहुँचे। प्रेमी जी ! एक पत्रिका चमनलाल की आई है। जिस में बाल समता समाज के मैम्बरों के नाम लिखकर भेजे हैं। बड़ी ही खुशी है कि बच्चों के अन्दर धर्म के संस्कार प्रगट हुए हैं। मगर तुमको वाज़या होवे कि अच्छी तरह से इनकी रहनुमाई (पथ प्रदर्शन) करनी। ऐसा न होवे कोई अलैहदा (अलग) खिचड़ी पकाने लग जावे। हर एक बच्चे को हिदायत करें कि तुम्हारे सत्संग में हाज़िर हुआ करे। और तुम तमाम बच्चों को महामंत्र, मंगलाचरण, आरती और समता मंगल याद करा देवें। पुस्तकों से नकल करके हर एक को दे देवें। अगर कोई होशमंद विचार करना चाहे दे देवें। मगर साथ हिफाज़त की हिदायत करें। मुतालया (अध्ययन) के बाद फिर वापस ले लेवें। यह सब ईश्वर की प्रेरणा है, कि बच्चों के अन्दर ऐसे जज़बात पैदा हो रहे हैं। अब तुम्हारा फर्ज़ है कि अच्छी तरह से प्रेम करके सबको सदाचारी होने की हिदायत करते रहें। बच्चों को भी पत्र लिखा गया है। उसको पढ़कर अमल करने की कोशिश करें। ईशवर सत् बुद्धि देवें। तमाम संगत दौरांगला को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सत् अनुराग देवे ।

(मंगतराम - अज़ काहनूवान)

सत् गुणों को धारण
करने की तलक़ीन (शिक्षा)

पत्र नं० - 34

आज्ञाकारी सती सेवक दौलतराम जी व तमाम संगत समतावाद दौरांगला !

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत्संग प्रीति बक्शे। तमाम संगत को एक एक करके आशीर्वाद पहुँचे और यह प्रार्थना करनी कि हर वक्त ईश्वर विश्वास धारण करें। अपने अंदर निश्काम देश भक्ति और गुरु भक्ति को धारण करें। हर वक्त समता धर्म की तहकीकात (खोज) धारण करें। अपने असली धर्म के गौरव को प्रज्जवलित करें। सादगी, सेवा, सत्य, सत्संग तथा सत सिमरण आदि महान गुणों को अपनाएं। यही हुक्म ईश्वर का है। प्रेमी जी ! तुम अपने आप को धर्म मार्ग में कुर्बानी स्वरूप में पेश करें। हर वक्त प्रागंदा ख्यालात और बुरे अमाल (दुराचार) का त्याग करें। गुरमुख जीवन यानी ईश्वर आज्ञा में सब कुछ देखें। समय निकाल कर ईश्वर का सिमरण किया करें। मूर्खताई में आकर जीव ईश्वर की हस्ती से मुनकर तो हो जाता है, मगर अपनी ख्यालात की कैद में आकर नेक व बद कर्म करके दुनिया से बेज़ार (अप्रसन्न) ही जाता है। जो ईश्वर में विश्वास नहीं

रखता वही चंडाल का स्वरूप है। यानि अपनी हिकमत अमली (कूटनीति, पालिसी) क्या क्या खुदगर्जी का जाल फैलाता है, आखिर उस जाल में फंसकर तड़प तड़प कर मर जाता है। इन बातों को हरगिज़ (कदापि) न भुलाएं।

1. ईश्वर विश्वास, 2. निष्काम सेवा, 3. सत्संग का प्रेम, 4. फजूलखर्ची का त्याग, 5. हर तरीके से मनुष्शी चीज़ों से परहेज़, 6. अपनी मौत की याद, 7. हर घड़ी, हर लमहा दूसरे की भलाई चाहनी। ऐसे नेक गुणों के धारण करने से मन में शान्ति और प्रेम प्रकट होता है। ईश्वर सबको सत् बुद्धि देवे। सत्संग प्रीति बक्शे।

(मंगतराम अज़ सरुपा जंगल)

सदाचारी जीवन और ईश्वर भक्ति को धारण करने की तलकीन (शिक्षा)

पत्र नं० - 35

आज्ञाकारी सती सेवक दौलतराम जी व समता समाज दौरांगला ! आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत् श्रद्धा देवे। तमाम प्रेमियों को एक एक करके आशीर्वाद कहनी। इन बातों को हर वक्त याद रखना चाहिए।

1. दुनिया में सदाकत (सच्चाई) पसंद बहुत थोड़े होते हैं। आम जनता माया की गिरफ्तारी (गुलामी) झूठ अंधकार को पसंद करती है।

2. सदाकत पसंद (सच्चाई पसंद) लोग अपने रास्ते को साफ करते हैं। उनको दूसरे लोगों से मतलब नहीं।

3. जिस वक्त मुस्तकिल होकर (दृढ़ होकर) सच्चाई के मैदान में कोशिश जो करता है, उस वक्त दूसरी जनता खुद उसके पीछे चलती है। किसी को सुधारने की खातिर अपना खुद सुधार किया जावे। तब बेहतरी हो सकती है। तुम तमाम प्रेमियों को समता के असूल अपनाने की कोशिश करनी चाहिए। जिससे तुम्हारी ज़िन्दगी बहुत आला (उत्तम) बन जावे और दूसरे लोगों को भी सुख मिले।

प्रेमी जी ! सत्संग का प्रोग्राम दृढ़ रखें। ईश्वर खुद बखुद तरक्की देवेंगे। सच्चाई के रास्ते चलने में बेशक तकलीफ तो बहुत

होती है। मगर उसका समर (फल) परम सुख देने वाला है। इस दुनिया में बगैर सत् मारग के चलने के कभी भी असली खुशी को प्राप्त नहीं कर सकता। हर वक्त दूसरे की भलाई चाहें और अपने सच्चे धर्म समता में हर वक्त कुर्बान होने की कोशिश करो। इस वक्त हिन्दू धर्म को जो ज़ाहरी देखते हो वह असली भाव से बहुत पीछे हो गया है। यानी खुदगर्ज़ उपदेशकों ने असली तालीम को अलोप कर दिया है। खुद भी अंधकार में अत्याचार करने लगे और जनता के वास्ते भी पाप कर्म का रास्ता खुला कर दिया है। ऐसे नाजुक जमाने में बहुत सी कुर्बानी से जागृति होवेगी। तुम सच्चे धर्म पुत्र होकर ज़रुरी सेवा का सबूत देवें। प्रेमी जी ! जिस इंसान के अंदर असली धर्म का विश्वास नहीं और अपने देश की सेवा का भाव नहीं, वह इंसान मत जानें बल्कि हैवान है। अपनी खुदी में गल्तान (लीन) है। हर वक्त कोशिश करनी चाहिए नेक क्रमों की। सादगी, सेवा, सत्, सत्संग और सत् सिमरण इन नियमों को हर वक्त अपनाते रहें। आत्म विश्वासी रहें। अपनी जिन्दगी में देशभक्ति हासिल करें। यह चाम का शरीर आखिर अकार्थ ही जावेगा। प्रेमी जी ! नित ही असली ज़िन्दगी को हासिल करो। अपनी आदत को काबू करके परोपकारी बनाओ। समता की रोशनी को फैलाओ। जिससे लोगों को शान्ति मिले। ईश्वर विश्वास, देश सेवा, सदाचारी जीवन और ईश्वर भक्ति को हर वक्त धारण करते रहें। इन ही

सत् नियमों से मन शुद्ध होकर आत्म प्रायण हो जाता है और इस संसार से असली खुशी लेकर जाता है। तमाम जनता को एक एक करके आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सबको सत बुद्धि देवे और समता का जीवन बक्शे। पं० गौर प्रसाद, साईंदास, मुन्शीराम सराफ, मुन्शी राम, देसराज, हंसराज, हरगोपाल, छांगामल, मंगतराम शाह, अमरनाथ, कर्मचंद, छज्जूराम, त्रिलोकनाथ, बाबूराम, पोस्ट मास्टर, ज्ञानचंद, रतनचंद, ओमप्रकाश, अमरनाथ, बंसीलाल, के शोराम, सरधाराम और तमाम माताओं को, बच्चों को व दीगर नगरवासियों को बीर सिंह, हरबंस सिंह वगैरा तमाम जनता को एक एक करके आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सबको सत् बुद्धि देवे और समता का जीवन बक्शे। पत्र लिख दिया करो। आज इस जंगल में काफी संगत एकत्र हुई है। बारिश भी हो रही है। आखीर असाढ़ तक इस जगह ठहरेंगे। फिर जो आज्ञा ईश्वर की। तमाम संगत को पत्र सुनाया करो। नई पुस्तक भी बनारसी दास ने रवाना कर दी होगी। पुस्तकों को अच्छी तरह विचार किया करें। इनमें बहुत बहुत साधारण तरीके से धर्म का स्वरूप प्रकट किया गया है। अपने तमाम कुन्बा को आशीर्वाद कहनी और रतनचंद के पिता को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर संकट हरण करें।

(मंगतराम - अज़ सरुपा जंगल चनारी)

कर्म फिलासिफी (जीव की गति)

पत्र नं० 36

आज्ञाकारी सती सेवक रतनचंद जी दौलतराम जी

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत् श्रद्धा देवे। तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी बमय (सहित) बच्चों के। ईश्वर धर्म का निश्चय देवें। प्रेमी जी ! जो गति का विचार लिखा है। उसका निर्णय यहहै कि मन अपनी करनी से कैद में आ जाता है और अपनी करनी से रिहाई (मुक्ति) पाता है। जो ज़िन्दगी में नेक व बद कर्म करता है उसका अभिमानी होकर खुद ही दुख व सुख पाता है। दूसरा कोई तसल्ली नहीं दे सकता है। जव तक कि खुद अपना कल्याण न करे। जिस तरह अपने खाने पीने से ही तृप्ति होती है, दूसरे के खाने से आप तृप्त नहीं हो सकता है। यही विचार हर एक कर्म और अमल का है। जिस तरह भी होवे जीव खुद ही भलाई अख्तयार (धारण) करेगा, तब ही शान्ति होवेगी। कानूने कुदरत (प्रकृति का नियम) यह ही है। यानि मसला कर्म का चक्र इसी तरह हर एक जीव को भोगना पड़ता है। कोई आज़ादी नहीं दे सकता है। जब तक कि खुद बाअकल नेक न होवे। यह निश्चय कर लेवें। तमाम संगत को दोबारा आशीर्वाद कहनी। आज लाहौर से जा रहे हैं। अभी मुकम्मिल पता नहीं कि ज़्यादा मुकाम (ठहराव) किस जगह होगा। इसलिए आइंदा पता देने पर चिट्ठी लिखनी। क्यों कि लाहौर में फुरसत

(अवकाश) नहीं मिली। इस वास्ते जवाब में देरी हो गई है। हर वक्त हमको हृदय में देखें और अपनी उन्नति करें। बाल समता समाज का उत्साह बढ़ाते रहें। खुद आपस में अधिक सलूक रखें। कोई शिकायत सुनने में न आवे। यह याद रखना कि तुम लोगों ने तालुक (संबंध) सख्त जगह लगाया है। ज़रुरी खौफ (भय) रखना और अपनी बहतरी (भलाई) करनी। ईश्वर सत् श्रद्धा देवे। प्रेमी प्रकाश का पत्र मिला, ईश्वर संकट नाश करे और सदाचारी जीवन बक्शे। इसी तरह गाहे बगाहे पत्र लिखा करें। तमाम संगत को एक एक करके आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सत् अनुराग देवे।

(मंगतराम अज़ लाहौर)

अमली जीवन बनाने की तलकीन (शिक्षा)

पत्र नं० 37

आज्ञाकारी सती सेवक रतनचंद जी दौलतराम जी

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत् श्रद्धा देवे । तमाम संगत को एक एक करके आशीर्वाद कहनी । प्रेमी जी ! निगाह दूर की (दूर दृष्टि) पैदा करें। तब पता चलेगा समता की तालीम रुहानी आज़ादी और असली खुशी का स्वरुप है । और आजकल मादे (प्रकृतिवाद) की आज़ादी जो वास्तव में तबाही का जाल है, उसका अधिक प्रचार हो रहा है। किसी वक्त यह सूरत (परिस्थिति) बदल कर समता के सरुप में आ जाएगी । इस वास्ते तुम अपना अमली जीवन बनाकर अपने असूल पर कारबंद (पाबंद / दृढ़) रहें । जो कुछ होता है, वह प्रभु हुकम से ही होता है । समय पर अक्सर (प्रायः) कई गुरमुखों की कुर्बानियां देश को जीवन देती हैं। ईश्वर सत् बुद्धि देवे । तमाम प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी । सत्संग में अगर हाजिरी कम है तो भी कोई हर्ज नहीं । तुम अपना असूल मुकम्मिल रखें । ईश्वर की कृपा दृढ़ निश्चय से बाअमल (क्रियात्मक) होने से ज़रूरी होती है । अपनी कुशल पत्रिका लिखते रहा करें । कुछ समय तक एक एकान्त जगह मुकीम (ठहरे हुए) हैं ।

पता : समयाला कोठी मार्फत लाला देवराज जी, मैनेजर, टी एस्टेट, बैजनाथ, तहसील पालमपुर, ज़िला कांगड़ा। यह जगह बैजनाथ से छ: मील के फासले पर है 15%, (साढ़े पांच) हज़ार फुट की बुलन्दी (ऊंचाई) है। तमाम प्रेमी अपनी कुशल पत्रिका लिखते रहा करें। ईश्वर सत् विश्वास देवे और देश के वास्ते एक आलातरीन (अति उत्तम) जीवन बनाने में हर वक्त प्रभु प्रायणता धारण करें। ईश्वर गुरु बचन का विश्वास देवे। तमाम दौरांगला निवासियों को आशीर्वाद कहनी। अपनी कुशल पत्रिका हफ्तेवारी लिखते रहा करें।

मंगतराम अज़ समयाला कोठी बैजनाथ (कांगड़ा)

सेवा और देश भक्ति की तलकीन (शिक्षा)

पत्र नं० - 38

आज्ञाकारी सती सेवक दौलतराम व समता समाज दौरांगला !

आशीर्वाद पहुँचे । पत्र मिला। ईश्वर सत् बुद्धि देवे । तमाम संगत को एक एक करके आशीर्वाद कहनी । प्रेमी जी ! ईश्वर पर भरोसा रखकर नित ही अपने जीवन का सुधार करें । संसार में मानुष जनम का फर्ज़ है कि नेक रास्ते पर चल कर जीवन का सुधार करें और लोगों को शान्ति पहुं चायें । प्रेमी जी ! दुर्लभ समय, नेक विचार, नेक कोशिश, परोपकार और सत्संग में गुज़ारना चाहिये । इससे पवित्र जीवन होता है । और आनन्द मिलता है । अभ्यास जरुरी किया करें। और संगत की सेवा तन मन और धन करके करें । तुम्हारा अव्वल (प्रथम) फर्ज़ है कि हर एक के अंदर मुहब्बत के जज़बात पैदा करें अपनी सच्ची कोशिश से कामिल मर्द बनकर दिखायें । तमाम संगत को प्रार्थना करनी कि ईश्वर पर भरोसा रख के अपने में एकता, प्रेम पैदा करें । यह ज़माना बड़ा नाजुक है । ईश् वर का हुक्म यही है," गरीब अनाथों की सेवा का भाव पैदा करें । मुन्शीराम सरार्फ, साईंदास, के शोराम, छांगामल, पं०गौरप्रसाद, देसराज, हंसराज, अमरनाथ, बैजनाथ, ओमप्रकाश, रतनचंद, बाबूराम और दीगर प्रेमियों को एक एक कर के आशीर्वाद कहनी ईश्वर सबको समता बुद्धि देवे । हरबंससिंह, सरदार बीरसिंह को आशीर्वाद कहनी । सत्संग की तरक्की करनी हर एक प्रेमी का अव्वल

(प्रथम) फर्ज़ है। बड़ी से बड़ी कोशिश करके अपने जीवन को देशभक्त बनावें। इस मानुष जनम की यही मौज है। इन बातों को हर वक्त विचार करें। अपने अन्दर देश और धर्म का दर्द पैदा करें। समता ही हिन्दू धर्म का असली मम्बा (वास्तविक स्रोत) है। आज बिगड़ कर कई सूरतें (शक्लें) अखत्यार (धारण) कर ली हैं। अज़ सिरे नौ (नये सिरे से ईश्वर हुक्म से यह अंकुर दोबारा प्रकट हुआ है। तुम इस को पानी अमली ज़िन्दगी का डालकर परवरिश (पालना) करनी। ताकि फिर से सुख की लहर प्रकट हो जावे। ऐसी अपनी ज़िन्दगी को मुकम्मिल बनावें जिससे जल्दी समता की रोशनी फैल जावे। हर वक्त अपने जीवन का सुधार करें। नेक असूल धारण करें। सादगी, सत्य, सेवा, सत्संग और सत् सिमरण को नित ही अपनायें। तमाम गुरुभाइयों को वाज़या करें (स्पष्ट) करें। पत्र लिखा करें और समता को अपनाने की कोशिश करें। यही निजात का असली रास्ता है। ईश्वर सत् श्रद्धा देवे। और सब सुख है। पत्रिका लिख दिया करो। तमाम प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सुमत देवे। समता समाज शाहपुर कण्डी और काहनूवान से भी तबादला ख्यालात किया करें जरुरी। इस जगह जंगल में चौधरी फकीर चंद जोकि शारियां गांव में रहते हैं और परम शिष्य हैं आये हैं। उन के अधिक प्रेम से इस एकान्त जगह आये हैं।

(मंगतराम - सरुपा बज़रीया (द्वारा) चुनारी)

पहले अपना जीवन पवित्र करो फिर दूसरों का

पत्र नं० - 39

आज्ञाकारी सती सेवक छज्जूराम जी !

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत् श्रद्धा देवे। तमाम कुन्बा को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सत् धर्म प्रतीत देवे। हर वक्त हम को हृदय में देखें। तमाम संगत को एक एक करके आशीर्वाद कहनी। प्रेमी जी ! तुम्हारे ज़िम्मे बड़ा बोझ है कि पहले अपना जीवन पवित्र करना फिर दूसरों के वास्ते यत्न करना। तुम बड़े खुश नसीब हो जिन को ऐसे रहबर (गुरु) की सरपरस्ती (संरक्षण) प्राप्त हुई है। अब इस तुअल्लक (सम्बंध) को खुशगवार (रुचिकर) बनाना है। और हर वक्त गुरु बचन के विश्वासी होकर अपने जीवन को मार्ग धर्म में दृढ़ करना तुम्हारा परम धर्म है। ईश्वर आज्ञाकारी जीवन बक्शे। तमाम प्रेमियों को एक एक कर के आशीर्वाद कहनी और जो बच्चों ने संगत कायम की है, उस को भी साथ शामिल कर सत्संग कर लिया करें। हर वक्त हम को हृदय में देखें और सत् भाव को ग्रहण करें। प्रोग्राम का अभी फैसला नहीं हुआ। जसवंतराय कुछ ज़्यादा वक्त के लिये मजबूर कर रहा है। अगले हफ्ते जैसा हुक्म हुआ प्रोग्राम बनेगा। तमाम प्रेमियों को वाज़या होवे कि तुम्हारी श्रद्धा हमारे दिल में है। और इधर से आशीर्वाद हर वक्त तुम को मिल रही है। ईश्वर सफलता देवे। और गुरु बचन का विश्वास धारण कर के दीन व दुनिया में सुरखुरुई (सम्मान) हासिल करें। अपने आप को मर्द कामिल बनायें (पूर्ण पुरुष बनायें)। और समता की रोशनी को फैलायें। यह ही तुम्हारे जीवन का राज़ है। ईश्वर आनन्द देवे। तमाम संगत को दोबारा आशीर्वाद कहनी। प्रेमी बिशम्बरदास को आशीर्वाद कहना। ईश्वर श्रद्धा देवे। बड़ी कृपा की है जो पत्र लिखा है।

(मंगतराम - अज़ काहनूवान)

समता धर्म को फैलाने का आदेश

पत्र नं० - 40

आज्ञाकारी सती सेवक ओमप्रकाश जी !

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत् श्रद्धा देवे। हर वक्त सत् धर्म विश्वास प्राप्त होवे। प्रेमी जी ! अपनी ज़िन्दगी का फर्ज़ जानकर मार्ग धर्म में कोशिश करनी चाहिये और ईश्वर का भरोसा रखना चाहिये। आखिर जीत प्राप्त होवेगी। तमाम मुल्क की हालत बिगड़ी हुई है, इसलिये समता धर्म को फैलाने की कोशिश करें। ईश्वर आज्ञा से हर एक के दिलों में घर कर जायेगी। खुद सत्संग का नियम दृढ़ रखें। जनता खुद बखुद हाज़िर होकर लाभ उठायेगी। अपना निश्चय नहीं तोड़ना चाहिये। एक आदमी बहुत कुछ कर सकता है। मगर तुम तो काफी हो। ईश्वर तुम को सामर्थ्य बक्शें और समता बुद्धि बक्शें। जिससे असली धर्म के सेवादार बनें। तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी। तमाम प्रेमियों को अभ्यास ज़रुर करना चाहिये। ईश्वर अधिक ईश्वर भक्ति बक्शें।

(मंगतराम अज़ सरुपा जंगल चुनारी)

समता के आदर्श को ऊँचा करने का आदेश

पत्र नं० - 41

आज्ञाकारी सती सेवक दौलतराम व समता समाज दौरांगला !

आशीर्वाद पहुँचे । पत्र मिला। ईश्वर सत् बुद्धि देवे । तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी एक एक कर के । ईश्वर आज्ञा से चुनारी आ गये हैं । शायद एक हफ्ता ठहरेंगे । प्रेमी जी ! तमाम दौरांगला की संगत को आशीर्वाद कहनी । कार्यवाही सत्संग की मिली । ईश्वर तुम को अधिक सामर्थ्य देवें। जिससे देश औरं धर्म के रक्षक बनें । तमाम छोटे बड़े प्रेमियों को यह प्रार्थना करनी कि अपना फर्ज़ मानुष जनम का ज़रुर अदा करना चाहिये । हर वक्त सत्संग प्रीति, सत् सेवा और ईश्वर विश्वास धारण करें। यही लाभ इस मानुष जिन्दगी का है। प्रेमी जी ! हर वक्त देश सेवा का विचार करना चाहिये । हमको हर वक्त अपने कदमों में देखें और समता की रोशनी को प्रकट करें । संसार की कोई चीज़ भी मन को शान्ति नहीं दे सकती । मासिवाये सत् अनुराग के । हर वक्त कोशिश करें नेक बनने की। तमाम देश की अबतरी (अस्त- व्यस्त) हालत समता के नियम से सुधर सकती है । इस वास्ते इस समता के आदर्श को ऊंचा करें। यही धर्म यथार्थ है। तमाम प्रेमियों को दोबारा सहबारा (तीसरी बार) आशीर्वाद कहनी । ईश्वर सबको एकता देवे जिससे अपने देश और धर्म के रक्षक बनें । सत्संग की कार्यवाही भेज दिया करें। पं० गौर प्रसाद, कर्मचंद, ओमप्रकाश, छज्जूराम, ज्ञानचंद, अमरनाथ, बैजनाथ, बाबूराम, पोस्टमास्टर सबको आशीर्वाद पहुँचे । तमाम प्रेमी कभी-कभी अपनी पत्रिका लिखा करें । हम को दूर न समझें बल्कि अपने हृदय में । तुम्हारी ज़िन्दगी देशभक्ति वाली चाहते हैं । ईश्वर सामर्थ्य देवें सत् मार्ग पर चलने की ।

(मंगत राम - अज़ चुनारी)

सवाल नहीं

पत्र नं० - 42

आज्ञाकारी सती सेवक परसराम जी !

आशीर्वाद पहुँचे । पत्र मिला। ईश्वर सत् श्रद्धा देवे । ईश्वर इच्छा से दो माह से बाहर आये हुए हैं । इस वास्ते तुम्हारी पत्रिका देरी से मिली। ईश्वर बुद्धि बल देवे । तुम्हारे पिताजी ने दर्शन दिये थे । और तुम्हारी शिकायत की थी कि शादी के बारे में आप उस को तहरीर करें (लिखें) । सो वाज़या होवे कि इस भाव को गौर करें कि तुम्हारी क्या मर्जी है । उस के मुताबिक (अनुसार) दृढ़ होकर चलें । संसार में रहते हुए भी कल्याण हो सकता है । अपना दृढ़ निश्चय होना चाहिये । अगर आज़ादी ही पसन्द है तो अधिक तरक्की हो सकती है । अगर मां बाप का भी बचन देखना है तो फिर जैसा मुनासिब होवे करें । बच्चों वाली बात नहीं करनी । मौकया पर ही सब काम होते हैं । इस वास्ते जिधर भी कदम उठाना होवे अपने निश्चय को दृढ़ करके उठावें । अपनी दृढ़ता ही सर्व कल्याण के देने वाली है । ईश्वर सत् बुद्धि देवे । दीगर (शेष) जो विचार तुमने लिखा है उसका भी मौकया नहीं है । प्रेमी जी ! अपनी आप की कल्याण करें । तो फिर सबकी हो सकती है । ईश्वर सत् धर्म विश्वास

पत्रिका : खास अबोहर मंडी, ज़िला फिरोजपुर, मार्फत बर दुकान (दुकान पर) आईदान, मुरली धर आड़ती के मिलकर - नाम लिख देना। पहुंच जावेगी। अपनी कुशल पत्रिका ज़रुरी लिखते रहा करें। हर वक्त ईश्वर विश्वास को धारण कर के अपनी जीवन यात्रा को पवित्र करें। अपने देश और जाति को रोशन करें। ईश्वर गुरु बचन का विश्वास देवे। मौकया पर सब सफलता हो जावेगी। प्रेमियों के जीवन की सिरफ उन्नति चाहिये। ईश्वर सत् अनुराग देवे।

(मंगतराम अज़ दौरांगला)

गृहस्त जीवन या विरक्त

पत्र नं० - 43

आज्ञाकारी सती सेवक मनीराम जी !

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत् शान्ति देवे। तमाम परिवार और गुणवंतराय को आशीर्वाद कहनी। प्रेमी जी ! बलवंतराय की पत्रिका खास तौर पर पढ़ी नहीं गई। और तुम्हारी पत्रिका से कुछ हालात अनुभव कर के उत्तर दिया जाता है। प्रेमी बलवंत राय को वाज़या होवे कि मानुष जीवन के वास्ते दो ही रास्ते हैं। एक बाकायदा (नियमानुसार) गृहस्ती होकर जीवन का समय गुज़ारना चाहे उस में दुख ही है। मगर मानसिक वासना का जाल जीव को कहीं स्थिर नहीं होने देता। इस वास्ते गृहस्त की सूरत (हाजत) मरयादा सहित विचरते हुए सत् भावना से जीवन समय व्यतीत करना कुछ शान्ति के देने वाला है। जैसी कि आम जीवों की जीवन यात्रा चल रही है, दूसरा रास्ता त्याग का है। यानि मानसिक वासना का निरोध कर के केवल सत् प्रायण होकर जीवन व्यतीत कर देना। सो प्रेमी जी ! तुम्हारी चंचल वृति इस त्याग मार्ग में स्थित होनी मुश्किल है और हालात ज़माना भी अधिक असत् भ्रम के गहरे अंधकार में गुज़र रहा है। इस वास्ते अपने अंत:करण में विचार करके ठीक ठीक फैसला कर लेवें, कि कौन सा मार्ग अख्तयार करना चाहिए।

मालूम देता है। इस वास्ते बाकायदा गृहस्त का मार्ग अख्तयार कर लेवें। अब तुमको शारीरिक अवस्था के मुताबिक जीवन व्यतीत करने का फैसला कर लेना चाहिए। कि कौन से मार्ग में मानसिक दृढ़ता हो सकती है। सो दोबारा ताकीद की जाती है। कि बच्चों वाला खेल न बनावें। बल्कि अंतःकरण में ठीक-ठीक फैसला कर के एक मार्ग में दृढ़ हो जावें। फिर गौर से विचार कर लेवें। कि त्याग का व्रत तुम से पूर्ण हो सकेगा। इस वास्ते पूर्ण निश्चय से फैसला करके गृहस्ती का स्वरूप धारण करें या त्यागी का। चूंकि त्याग का अपनाना कठिन है। इस वास्ते गृहस्त के स्वरूप में ही प्रवेश कर लेवें आगे जो प्रभु आज्ञा और जैसा तुम्हारा करम। प्रेमी जी ! पूर्ण फैसला कर के अपने बुजुर्गों को सुना देवें। ईश्वर नित सहायक होवें। प्रेमी मनीराम जी ! बलवंत राय की ख्वाहिश के मुताबिक हो सकता है। कि वह अपने आप को कौन से मार्ग में दृढ़ करना चाहता है। जो विचार लिखा गया है। उस को अनुभव कर के फिर उस की मर्ज़ीं और इच्छा होवेंगी, वैसे ही होगा। ईश्वर सत् विश्वास देवे। अपनी कुशल पत्रिका लिखते रहा करें।

(मंगत राम अज्ञ श्रीनगर)

सिनेमा सदाचार का नाशक

पत्र नं० - 44

आज्ञाकारी सती सेवक बलवंतराय जी !

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत् बुद्धि देवे। तमाम परिवार को आशीर्वाद पहुँचे। गुणवंत राय को आशीर्वाद कहनी। प्रेमी बलवंतराय जी ! तुम्हारी पत्रिका से बड़ी हैरानी मालूम हुई। कि तुम ने क्या लिखा है। किधर तुम्हारी बुद्धि गृहस्त मार्ग से इन्कारी करने वाली और किधर अब यह मूर्खताई कि आचारहीन लोगों के दिखलाये हुए तमाशे देखें। इधर से ऐसी इजाज़त बिलकुल नहीं हो सकती। इस संसार का प्रत्यक्ष सिनेमा देखकर केवल अपने आप को प्रबोधित करें। और मानुषों के बनाए हुये तमाशों से परहेज़ करें। इस सिनेमा आदि तमाशाओं ने तमाम हिन्दुस्तान के इख्लाक (सदाचार) को मिट्टी में मिला दिया है। अब तुम ऐसे संतों के शिष्य होकर नेत्रों द्वारा इन तमाशों के ज़हर (विष) को पान करना चाहते हो। इधर से बिलकुल इजाजत नहीं हो सकती और तुम्हारी इस नादारी (दरिद्रता) भावना को पत्र द्वारा अनुभव कर के निहायत (अति) हैरान हुए। इस मूर्खताई के भूत ने किधर से तुम्हारे अंत:करण में आकर प्रवेश किया है। प्रेमी जी ! इधर से बिलकुल बनावटी तमाशों को देखने की इजाज़त नहीं है। इस वास्ते अपनी प्रतिज्ञा को यदि तुम भंग करोगे तो इधर से खुशी न होगी। और शायद

तुम्हारे वास्ते भी कोई विशेष कल्याणकारी यह तरीका न होगा। आगे जैसे तुम्हारी मर्जी। इस याचना से तुम्हारे मानसिक हालात को विचार किया है कि अभी बच्चों के ख्याल से कोई ज़्यादा तरक्की नहीं की है। तमाम समय रायगां (व्यर्थ) कर दिया है। जो अब ऐसी रुचि धारण किये हुए हैं। तुम्हारी आज्ञाकारी भावना से निहायत (अधिक) शक पड़ रहा है। इस वास्ते अगर गुरु चरणों की सच्ची प्रीत रखने वाले हैं तो वापसी पत्रिका द्वारा अपनी प्रतिज्ञा को दृढ़ रखने का विचार लिखें। यह ताकीद (बात को ज़ोर देकर कहना) की जाती है। अगर नेत्रों ने इस विश्व को जो प्रत्यक्ष तमाशा चल रहा है, देखकर कुछ सबक नहीं लिया है, तो बनावटी तमाशों से कभी तृप्ति न होगी। बल्कि तमाम आचार बिगड़ जायेगा। इस विचार को अच्छी तरह से विचार करके अपने आप को पवित्र करने की कोशिश करें। यह खोटी भावना को त्याग देवें। तुम्हारे वास्ते यह निर्मल उन्नति का नियम है। आगे जो प्रभु आज्ञा और तुम्हारी मर्जी। जब तक तुम्हारी प्रतिज्ञा पालन की पत्रिका न आवेगी तब तक तुम्हारी गुरुमुख भावना में शक हो पड़ा रहेगा। इस वास्ते अपनी मानसिक पवित्रता का पत्र लिखें। प्रेमी मनीराम जी ! आप भी बलवंतराय को समझा देवें। आगे उस की मर्जी। ईश्वर सत् भावना देवे।

(मंगतराम अज़ श्रीनगर)

बाअसूल जीवन की तलकीन (नसीहत)

पत्र नं० - 45

आज्ञाकारी सती सेवक रतनचंद जी !

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत् श्रद्धा देवे। तमाम संगत को एक एक कर के आशीर्वाद कहनी। अपनी माता जी को, भ्राताओं को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सदाचारी जीवन बक्शे। प्रेमी जी ! हर वक्त अपने जीवन को बुलंद (ऊंचा) करने की कोशिश करते रहें। ईश्वर के दृढ़ विश्वासी होकर अपने जीवन को नित परोपकारी बनावें और समता की रोशनी को फैलायें। जिस से सब जीव सुख पावें। तमाम प्रेमियों का फर्ज़ है कि अपना जीवन बाअसूल बनाकर दूसरों को एकत्र होने की प्रेरणा करते रहें और सत्संग का नियम बहुत आला (उत्तम) बनावें। जिससे दूसरों को सबक आवे और धर्म की उन्नति होवे। प्रेमी दौलत राम को वाज़या होवे कि पत्र मिला। आप को कुछ नहीं लिखा जाता। अगर तुम अपने रहनुमा (गुरु) के बचन को आनन्ददायक समझ चुके हो तो, प्रेमी जी ! फिर आगे आगे ही होते जावें और अपने जीवन को लामिसाल बनावें। तुम प्रेमियों की कुर्बानी से ही धर्म जागृत होगा। हर वक्त हम को हाजिर समझें। समता की रोशनी हर एक के दिल में पहले कायम हो जावे और जिधर भी जावें समता की तलकीन करते रहें। (तलकीन - नसीहत) इस वक्त अंधकार फैला हुआ है। हर

वक्त सत पुरुषार्थ धारण करें। ईश्वर अधिक गुरु बचन का विश्वास देवे। रतन चंद जी ! आगे एक पत्र लिखा गया है। बाल सतसंग के बारे में उन बच्चों की अच्छी तरह निगरानी करनी। कुछ वक्त के बाद वह ही समता के प्रकाश करने वाले होंगें और अमोलक राम को हालात बाला रवाना कर देवें। इस में हमारे देखने की ज़रुरत नहीं है। यह तुम्हारा प्रेमियों का काम है। तमाम प्रेमियों को एक एक कर के आशीर्वाद कहनी। ईश्वर एक जीवन सबका कर देवें। ताकि एक लक्ष्य कायम कर देवें। ईश्वर सतबुद्धि देवें। अमरनाथ ने दर्शन दिये हैं।

(मंगतराम - अज़ काहनूवान)

गुरु भक्त होने का आदेश

पत्र नं० - 46

आज्ञाकारी सती सेवक किशोरी लाल जी !

आशीर्वाद पहुँचे। ईश्वर सत् बुद्धि देवे। शुभ कारज की तमाम तुम्हारे खवेश (नज़दीकी / समीपस्थ) को मुबारक बाद होवे। प्रेमी जी ! सत विश्वासी होकर संसार के निहायत (अति) कठिन मार्ग में विचरें। जीवन के सही आदर्श को हर समय मद्देनज़र (दृष्टिगोचर) रखें। यानी ईश्वर सिमरण और लोकसेवा में दृढ़ निश्चय रखें। ईश्वर परायणता में निश्चित होने से सर्वकल्याण प्राप्ति होती है। अपने बुजुर्ग माता पिता का पूर्ण ताबेदार (आज्ञाकारी) रहना होगा। सादगी, सेवा, सत्य, सत्संग और सत सिमरण आदि नियमों का पूर्ण प्रण से पालन करते रहना चाहिए। ऐसे नियमों को धारण करने से बहुत सी संसारी क्लेशों से शान्ति रहती है और अन्तर मन निर्भय होता है। हर वक्त गुरु भक्त होकर सत् शिक्षा को ग्रहण करते रहना चाहिये। ईश्वर सत् बुद्धि प्रकाश करें। अपने खानदान, जाति, देश और धर्म के वास्ते एक रोशन मीनार बनें। ईश्वर शुभ कारज निर्विघ्न समाप्त करें। हर वक्त हमको हृदय में देखें। कुशल पत्र लिखते रहा करें। अपने तमाम खवेश परिवार (नजदीकी रिश्तेदार) और जज मूलराज जी दीनानाथ जी और गिरधारी लाल और दीगर तमाम प्रेमियों को एक एक करके आशीर्वाद कहनी। ईश्वर एकता प्रेम और सत् श्रद्धा बक्शें। और गुरु कहनी में अधिक विश्वास प्राप्त होवे।

(मंगतराम - अज़ जगाधरी)

पत्र नं० - 47

आज्ञाकारी सती सेवक रतनचंद जी !

आशीर्वाद पहुँचे । पत्र मिला। ईश्वर सत् बुद्धि देवे । प्रेमी जी ! पत्र गाह बगाह लिखते रहा करें। इस से कल्याण होती है । नीज़ (और) कुठाला से 11 माह गुज़ार कर काला गुज़रां 4 में आये हैं। क्योंकि प्रेमी अमोलक राम ने मजबूर किया था । एक दो दिन इस जगह ठहर कर फिर किसी दूसरी जगह जावेंगें । पत्रिका अमोलक राम की मार्फत लिख देनी । पंहुच जावेगी । तुम ज़रुर कभी दौरांगला जावें और सतसंग का प्रोग्राम मुकर्रर करें । यह बड़ी गलती है । दौलत राम की भी चिट्ठी आई है । हिन्दू जनता की तबाही का पहला कारण यही है कि इकट्ठा न होना । सो समता की तालीम का मुख्य नियम सत्संग ही है । तुम प्रेमियों को ज़रुरी तड़प होनी चाहिये । तुम ने पत्र बड़ी देर से लिखा है । ईश्वर सत्बुद्धि देवे । पुस्तकों का विचार किया करें । इस से ज़्यादा सीरी (तसल्ली / इतमीनान) मिलती है । तमाम अपने कुन्बे को आशीर्वाद कहनी । हर वक्त समता की तालीम को जागृत करने में कोशिश किया करें । तुम्हारी ज़हानत (अक्ल) ज़रुरी देश सेवा में खर्च होनी चाहिये । महज़ (केवल) दुनिया की ऐशोइशरत की खातिर जिन्दगी नहीं है । बल्कि कुछ उपकार के वास्ते है। ईश्वर नाम का ज़रुर सिमरण किया करें । इससे अंत:करण में शुद्धि प्रकट होती है । प्रेमी जी ! तुम्हारी ज़िम्मेवारी तब ही उतर सकती है जब समता की तालीम को अपनाओ और दूसरों को भी कोशिश कर के इस तरफ राग़िब (प्रवृत) करो । इस से मिलाप प्रकट होता है। किसी वक्त ज़रुरी देश का भला हो जावे गा । तमाम लिट्रेचर से वाक्फीयत (जानकारी) हासिल करें । ईश्वर आनन्द देवे ।

(मंगतराम - अज़ काला गुजरां)

प्रभु प्रायणता का आदेश

पत्र नं० 48

आज्ञाकारी सती सेवक दीनानाथ जी !

आशीर्वाद पहुँचे। ईश्वर सत् शान्ति देवें। प्रेमी गिरधारीलाल को आशीर्वाद पहुँचे। तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी एक एक कर के। मूलराज जी को बामय परिवार (परिवार सहित) के आशीर्वाद कहनी। क्या वह श्रीनगर ही हैं, पता देना। तमाम संगत को वाज़या होवे कि ऐसे संकट के समय में प्रभु विश्वास और प्रभु कृपा का भरोसा रखते हुए समय व्यतीत करें। प्रभु दीनदयाल की शायद कृपा हो जावेगी और शान्ति का समय निश्चय आ जावेगा। अपने दृढ़ विश्वास से हर वक्त प्रभु परायण रहें। और सत् असूलों को धारण करते रहें। सत्संग और अभ्यास में प्रेम से समय दिया करें। प्रभु की कृपा होवेगी। हर वक्त गुरु आर्शीवाद अंग संग जानें और अपनी कुशल पत्रिका लिखते रहा करें। ईश्वर आज्ञा से यकम (पहली) फरवरी को जगाधरी की तरफ जा रहे हैं। मार्फत ला० केशोराम जी भवन बाज़ार, जगाधरी ज़िला अम्बाला के पते पर पत्र लिखना। ईश्वर समता बुद्धि देवे। कष्ट निवारण करें। हर वक्त प्रभु विश्वास और सत् सेवक भावना को धारण करते रहें। प्रेमी ठाकुर ज़फरसिंह जी, राम सिंह जी, नानकचंद जी, लखमी नाथ जी, बिहारी लाल जी, मदनगोपाल जी, पं० परसराम जी व दीगर और तमाम प्रेमियों को एक एक कर के आशीर्वाद कहनी। प्रभु कृपा अंग संग होवे। अपना जीवन सदाचारी और परोपकारी बनावें। हर वक्त गुरु बचन को अपनाएं। प्रभु नित सहायक हों। वापसी जवाब जल्दी देना। ईश्वर सत् श्रद्धा और प्रेम बक्शे।

(मंगतराम - अज़ काहनूवान)

दुख सुख प्रभु इच्छा में देखकर
धीरज धारण करो।

पत्र नं० - 49

आज्ञाकारी सती सेवक दीनानाथ जी !

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिले और पार्सल भी मिल गया है। बिलकुल सही सलामत कागज़ात मिल गये हैं। ईश्वर अधिक श्रद्धा प्रेम देवे। प्रेमी गिरधारीलाल और बच्चों को आशीर्वाद कहनी। तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी एक एक कर के। हर वक्त प्रभु परायण हो कर संकट का मुकाबला करें। प्रभु सत् शान्ति देवेंगें। प्रेमी मूलराज जी को आशीर्वाद लिखनी। हर वक्त इस संसार नाशवान की यात्रा में अपने आप को सत परायण बनावें। दुख सुख प्रभु इच्छा में देखते हुए धीरजवान रहें। यही जीवन गुणी पुरुषों का होता है। अभ्यास और सत्संग में अधिक प्रेम रखें। अपना कर्तव्य ही सर्व कल्याण के देने वाला होता है। दुनिया का चक्र अक्सर कई प्रकार की तब्दीलियां दिखाता है। मगर गुणी पुरुष सब हालात प्रभु आज्ञा में समर्पण करते हुए असंग रहते हैं। यह निश्चय ही सत् शान्ति के देने वाला है। सब सुख के हालात एक जैसे नहीं रहते। कुछ न कुछ तब्दीली बनी रहती है। इसी का नाम दुनिया है। ईश्वर सत् विश्वास देवे। तमाम प्रेमियों को दोबारा आशीर्वाद कहनी। हर वक्त हमको हृदय में देखें। अपने आप को निहायत (अति) श्रद्धावान बनाकर दृढ़ होवें। ज़िन्दगी की खोज ही असली मौज है। ईश्वर गुरु बचन

का विश्वास देवे। गिरधारीलाल श्री नगर वाला के खानदान बुजुर्ग शाह वगैरा जो उस वक्त जगह होवें तो आशीर्वाद कह देनी। और जो मौजूद हों उन सबको आशीर्वाद कह देनी। ईश्वर सब को सत बुद्धि और ईश्वर प्रेम देवे। ईश्वर आज्ञा से जल्दी ही दूसरी जगह जाने वाले हैं। फिलहाल (इस समय) इसी पता पर पत्र लिखना। जिस जगह भी गये पहुंच जावेगा। ईश्वर नित ही रक्षक होवे और गुरु आशीर्वाद अंग संग जानें। प्रेमी राम दास कुली उस जगह होवें तो आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सब जनता में धीरज और धर्म देवे।

(मंगतराम अज़ जगाधरी)

बचन विचार करें

बंधन हरे निज पद लेवे, जो गुरु सीख विचारे।
परम सखा गुण ज्ञान का दाता, एको सतगुरु नित बलहारे॥
मन की भरमन सब नाश होई, ज्यों शिक्षा सार कमाई।
नाम आधार नित जीवन पाया, घट अवगत जोत दरसाई॥
परम ठौर तत्त आत्म सूझा, सब दुर्मत छाया नासी।
'मंगत' कृपा परम पुरुष से, सब भरमण मिटी चौरासी॥

ग्रंथ की छपाई भागों में (एक आदेश)

पत्र नं० - 50

आज्ञाकारी सती सेवक दीनानाथ महंगी जी !

आशीर्वाद पहुँचे । ईश्वर सत् शान्ति देवे । तमाम प्रेमियों को एक एक करके आशीर्वाद कहनी । तमाम परिवार को आशीर्वाद कहनी । प्रेमी गिरधारीलाल को आशीर्वाद पहुँचे । ईश्वर नित ही सहायक हों। प्रेमी जी ! आज ग्रंथ जल्दबंदी होकर के आ गया है। और चंद प्रेमी मौजूद थे, इसके मुतल्लिक (संबंध में) विचार हुआ । ग्रंथ कोई ज़्यादा वज़ानी नहीं है । रामायण, महाभारत, योगवशिष्ट से कुछ कम है । ग्रंथ को टुकड़ों की सूरत में छपवाने से वह कद्र नहीं रहती । जो कि एक धार्मिक पुस्तक में होती है । ऐसा ही सबने विचार किया है । वैसे अगर ग्रंथ के बगैर छपाई करानी होवे तो जैसा कि आगे पुस्तकें छपी हैं । वह अलैहदा अलैहदा सूरत में (अलग अलग शक्ल में) उसी तरह और उसी नाम पर छप सकती हैं। उसका समता प्रकाश हिस्सा (भाग) अव्वल (पहला) या दोयम (दूसरा) नाम रखने की कोई जरुरत नहीं है । क्योंकि जितनी ज्यादा तादाद की छपाई होने खर्च वही होवेगा, जितना थोड़ी तादाद पर । सिरफ कागज का खर्च कुछ ज़्यादा होता है । ज़्यादा तादाद में और खर्च वैसे के वैसे ही हैं।

नसर (गद्य) समता विलास कोई इतनी बड़ी नहीं है। वह तो एक दरमयानी पुस्तक मुताबक (अनुसार) है। अब चूँकि ग्रंथ की छपाई का ऐस्टीमेट खर्च (अनुमानित व्यय) बहुत ज़्यादा है। इस वास्ते फिलहाल (मौजूदा समय में) मुलतवी (स्थगित /Postpone) ही होवेगा। अगर कोई ज़िन्दा रहा और समय अच्छा आया तो छप जाएगा।

अगर अलैहदा-अलैहदा (अलग अलग) पुस्तकों की सूरत कोई पुस्तक छापी जावे तो सहल है। मगर प्रेमियों का विचार यही था कि पहले ग्रंथ छपे और बाद में छोटी छोटी। अलैहदा-अलैहदा पुस्तकों की और सूरत है। और एक ग्रंथ की और जरुरत है। और खास कोई वजनी भी नहीं है। आगे उससे बहुत बड़ी-बड़ी धार्मिक पुस्तकें मौजूद हैं। छपवाई के मुतल्लिक (संबंध में) विचार यह है कि कुछ समय अभी अनुकूल नहीं मालूम होता है। कागज़ वगैरा की भी मिलने में मज़बूरी ही है। और ग्रंथ के छपवाने में काफी कागज खर्च होगा। और मेहनत भी इलावा (अलग)। इस का ऐस्टीमेट खुद बनारसीदास लिखेगा। जैसा कि उस ने दिल्ली से बज़रिया (द्वारा) डा० भगतराम के मालूम किया है। अब विचार हिन्दी की भी छपाई का हो रहा है। क्योंकि आइंदा प्रचल्लित इसी का होवेगा इस वास्ते अगर छपाई होवे तो कम अज कम 500 हिन्दी

और 500 उर्दू की छपे तो खर्च होने पर कुछ फायदा हो सकता है। अगर इस से कम छपाई होवे यानी 200 या 300 तो भी अच्छा है। मगर खर्च ज़्यादा पड़ेगा। ईश्वर सत् विश्वास देवे। खर्च की ज़्यादती में और हालात की नादरुस्ती (प्रतिकूलता) में अभी शायद प्रभु इस कारज को न ही सरइंजाम (सम्पूर्ण) दे सकें सिरफ यह जरुरी अंत:करण में दृढ़ करना कि तुम्हारे गुरु की कठिन तपस्या और ईश्वर आज्ञा से यह सरल भाषा में परमार्थिक स्वार्थिक सुधार की तालीम प्रकट हुई है। कभी न कभी इसको जब प्रभु हुक्म होवे प्रैस में छपवाकर जनता की भेंट करना। इससे जीवों को फायदा होवेगा। आगे जो आज्ञा नारायण की। अपने अनुकूल विचार से मुतला करना। और पं० बिहारी लाल को भी पत्रिका दिखा देनी। और भी तमाम प्रेमी विचार कर लेवें। इधर से कोई मजबूरी नहीं है। सिरफ तुम को अधिकारी होने के कारण मुतला (सूचित) कर दिया गया है। आगे जैसी प्रभु आज्ञा। ईश्वर सत् अनुराग देवें। तमाम प्रेमियों को दोबारा आशीर्वाद पहुंचे। अपनी कुशल पत्रिका लिखते रहा करें।

(मंगत राम अज मसूरी)

नोट - यह पत्र सन् 1948 में ग्रंथ श्री समता प्रकाश की सम्पूर्णता पर लिखा गया था।

आश्रम में कुटिया

पत्र नं० 51

अज़ श्रीनगर **ओ३म् ब्रह्म सत्यम् - सर्वाधार**

15.06.50

सत् आज्ञा श्री गुरुदेव जी !

श्रीमान पूज्य भाई साहिब बाबू अमोलक राम जी !

प्रेम पूर्वक चरण वन्दना स्वीकार करें जी। श्री सत्गुरु देव श्री महाराज जी आशीर्वाद फरमाते हैं। आप स्वीकार करें जी। श्रीमान भाई साहिब राम स्वरूप जी, शेषराज जी, व्रतपाल जी, गोकलचंद, गोपी चंद, राम सरण व सरब दयाल जी, सत्यपाल जी, चौधरी धर्मसिंह जी वगैरा सब को आशीर्वाद फरमाना जी। श्री महाराज जी फरमाते हैं आप के प्रेम पत्रों द्वारा सब हालात से पूरी- पूरी आगाही (जानकारी) हो रही है। श्री महाराज जी की दया से प्रभु जी नित सहायक होवें जी। शुभ कारज निर्विघ्न समाप्त होवें जी। सेवा में अर्ज़ यह है कि श्री महाराज जी फरमाते हैं कि बक्शी राम जी के बारे में तुम्हारा विचार ठीक है। किसी प्रेमी को अपनी मलकीयत की ममता आश्रम की हदूद में नहीं होनी चाहिए। कुटिया इस कदर जरूर होवे जिस में कम अज़ कम 4 या 5 प्रेमी ठहर सकें। ज्यादा कुटियाएं भी बनाने की इजाज़त न होगी। क्यों कि जगह घेरी जाती है। सिरफ दो-चार कुटियाएं एक नमूने की फिलहाल के विरक्त प्रेमियों के वास्ते

काफी हैं। प्रेम संबंध से गुजारा ही करना है। बक्शीराम जी को किस ने कुटिया के वास्ते मजबूर किया है। जो कुटियाएं बनेंगी उस में वह भी गुज़ारा कर सकते हैं। उन को कोई खर्च करने की जरूरत नहीं है। बाकी अर्ज यह है कि प्रेमी भाई बिशन दास जी की आज पत्रिका आई है, उन्होंने लिखा है कि अभी में रुपया नहीं भेज सकता हूँ। शायद एक माह तक रवाना कर देवे। अगर उन को मिल गया तो। आप उस की इंतज़ार न करना जी। और कि लंगर का कमरा तैयार हो गया होगा। दास की तरफ से सब प्रेमियों को ब्रह्म सत्यम् फरमाना जी। श्री महाराज जी दोबारा आशीर्वाद फरमाते हैं। स्वीकार करें जी। दीन दयाल जी नित रख्यक होवें। श्री दीनानाथ जी गिरधारीलाल जी आप को ब्रह्म सत्यम् फरमाते हैं, स्वीकार करें जी।

आप के चरणों का दास - सेवक बनारसी दास।

सदाचारी और परोपकारी जीवन की जरूरत, समता का फैलाना ईश्वरी हुक्म

पत्र नं० - 52

आज्ञाकारी सती सेवक रतन चंद जी !

आशीर्वाद पहुँचे । पत्र मिला । ईश्वर सत् धर्म देवे । तमाम प्रेमी धारीवाल निवासियों को आशीर्वाद कहनी प्रेमी सचिदानन्द को आशीर्वाद के हनी ईश्वर देश सेवा और सदाचारी जीवन बक्शे । इस जगह 14 बैसाख को संगत का सम्मेलन हुआ । चनारी निवासियों ने सेवा का आला (उत्तम) सबूत दिया । तुम्हारी इंतज़ारी रखते रहे । तमाम दौरांगला के प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी । ईश्वर सब को सत्संग प्रीति बक्शे । प्रेमीजी ! लिट्रे चर तो काफी है। सिरफ इस को वाज़या करने की ज़रूरत है । दीगर स्वान्ह उमरी (जीवन गाथा) की बाबत अभी हुकम नहीं । कुछ-कुछ हालात बाबू अमोलकराम के पास हैं । अभी छपवाने की इजाज़त नहीं दी गई। ईश्वर के हुकम पर मुन्हसर (निर्भर) है । ईश्वर तुम को श्रद्धा देवे । सब काम आइस्ता-आइस्ता (धीरे-धीरे) हो जावेगा । अमोलकराम से कुछ वाकयात (घटनाएं) दरयाफत कर लेवें (मालूम कर लेवें) । अपनी कुशलता की खातिर कभी पत्र लिखा करो । बुनयादी असूल (आधार भूत नियम) जो सदाचार के हैं । उनका अच्छी तरह से विचार करें । अमोलकराम की मर्जी है कि नसर में (गद्य में) पुस्तकों के वाक्यात (घटनायें) छपवा कर मुनादी हो जाये । तुम भी अपनी राय देनी । उन से तबादला ख्यालात किया

करें। और अशायत (छपाई) की तजवीज़ (राय) पेश किया करें। तुम्हारी ज़िन्दगी पर बहुत बोझ है। बहुत खुश नसीब होगे जो इस भार को उठाओगे। ईश्वर समर्थ्य देवे। समता की हिदायत (सीख) हर एक को करें। यह ही हुकम ईश्वर का है। ईश्वर सत् बुद्धि देवे। दौरांगला में जब जावें तो तमाम प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी। धारीवाल के प्रेमी किस भाव पर जा रहें हैं। समता की रोशनी को फैलावें अगर ज़िन्दगी को चाहते हैं। हिन्दू फिलासिफी समता ही है। मगर आज अंधकार के जमाना में नुकतानिगाह (लक्ष्य) ही भूल गये हैं। बहुत कोशिश करो। इस संसार में आने का यथार्थ लाभ प्राप्त करें। आत्मिक उन्नति असली धर्म है। अपना जीवन सदाचारी बनावें परोपकार को धारण करें। ज़बान और दिल में मुहब्बत को जगह दें। इन्सान ही फरिश्ता बन सकता है अगर कोशिश नेक हो। अगर प्रेमी जी ! तुम ने सच्चा रीफार्मर माना है तो अपने जीवन को एक नमूना बनायें। इस वक्त अमली जीवन की ज़रूरत है। बातूनी लोगों ने आगे ही दुनिया को जलील कर रखा है। तमाम फिरके और तमाम सत् पुरुषों का समता ही जीवन है। इस को भूल कर बड़ी से बड़ी मुसीबत की तरफ ले जा रहे हैं। तुम इस चराग़ को हाथ में लेकर लोगों को पवित्र करें। वाह ! खुशनसीबी इस में है। ईश्वर आनन्द देवे।

(मंगत राम - अज चनारी)

समता ही संसार के सब धर्मों का मम्बा (स्रोत) है।

पत्र नं० 53

आज्ञाकारी सती सेवक रतनचंद जी, दौलतराम जी व समता समाज दौरांगला !

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत् बुद्धि देवे। प्रेमी जो तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी एक एक करके। ईश्वर सबको समता बुद्धि देवे। प्रेमी जी ! जरुरी अपने जीवन को नमूना बनाना चाहिए। समता की रोशनी को प्रज्वल्लित करने की हर चंद कोशिश करें। तमाम दौरांगला निवासियों को आशीर्वाद कहनी एक एक करके और प्रार्थना करनी कि ज़माना मुनादी कर रहा है समता की। इस वास्ते हरअपनी जिदंगी को पवित्र करें। समता के सत असूलों को धारण कर के देश और कौम की रक्षा का सबूत देवें। पं० गुर प्रसाद, बक्शी राम सराफ, साईंदास, अमरनाथ, मंगतराम, मुंशीराम, हंसराज, हरगोपाल, देसराज, छांगामल, के शोमल, बंसीलाल, ज्ञानचंद, बैजनाथ, छज्जूराम, ओमप्रकाश, कर्मचंद, अमरनाथ, बाबूराम, हरबंससिंह, बीरसिंह सबको ईश्वर समता बुद्धि देवे। पत्रिका लिख दिया करो। ईश्वर आज्ञा से तप की खातिर एकान्त जगह आ गए हैं। पत्रिका चनारी की मार्फत लिखनी। ईश्वर आज्ञा से शायद कुछ वक्त यहाँ कठोर तप में स्थित होवेंगे। क्यों कि देश में अशान्ति बढ़ी है। बाबू अमोलकराम का सिरफ यह विचार है कि कोई न कोई सुखों पुस्तकों के तरजमा (अनुवाद) करके यानि ऊपर शब्द और नीचे अर्थ। जिससे ज्यादा लोगों को फायदा पहुँचे। बड़ी पुस्तक मुतालय (अध्ययन) भी कई लोग नहीं करते। शायद एक ट्रैक्ट 'धर्म की माहीयत' (धर्म की तल्लीनता) छपवा रहे हैं। वह भी छप जावेगी तो तुमको रवाना करेंगे। मुताला (अध्ययन) करके जो राय देंगे, उसके मुताबिक वह करेगा। उसका मुद्दा यह है कि

लिट्रेचर की इशायत (छपाई) जिस तरीका से हो सके होवे। तमाम पुस्तकें तरजमा (अनुवाद) करने की इजाज़ात नहीं दी गई है। और वाणी की हिफाजत पूर्ण तरीके से होवेगी। अनकरीच (शीघ्र ही) तमाम वाणी एक पुस्तक में लिखवायेंगे। वाणी का तरजमा (अनुवाद) ऐसे नहीं बल्कि ऊपर श्लोक नीचे टीका का विचार किया है। ट्रैक्ट छपवाकर तुमको भेजा जावेगा। फिर विचार लिखना। ईश्वर अधिक श्रद्धा देवे। इन बातों को हर वक्त विचार करें। अपने अंदर देश और धर्म का दर्द पैदा करें। समता ही हिन्दू धर्म का असली मम्बा (स्रोत) है। आज बिगड़ कर कई सूरतें अख्तयार (धारण) कर ली हैं। अज़ सर नौ (नए सिरे से) ईश्वर हुक्म से यह अंकुर दोबारा प्रकट हुआ है, तुम इसको पानी अमली जीवन का डाल कर परवरिश (पालन - पोषण) करें। ताकि फिर सुख की लहर प्रकट हो जावे। ऐसी अपनी जिदंगी को मुकम्मिल बनावें जिससे जल्दी समता की रोशनी फैल जावे। हर वक्त अपने जीवन का सुधार करें। नेक असूल धारण करें। सादगी, सत्य, सेवा, सत्संग और सत् सिमरण को नित अपनाएं। तमाम गुरु भाईयों को वाज़या (चेतावनी) करनी कि पत्रिका सभी लिखा करें और समता को अपनाने की कोशिश करें। यही निजात (मुक्ति) का असली रास्ता है। ईश्वर सत् श्रद्धा देवे। और सब सुख है। पत्रिका लिख दिया करो। तमाम प्रेमियों को दोबारा आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सुमति देवे। समता समाज शाहपुर कन्डी और काहनूवान से भी तबादला ख्यालात (विचार विमर्श) किया करें जरुरी।

(मंगत राम बज़रिया (द्वारा) चनारी)

इस जगह जंगल में बज़रीया चोहदरी फकीर चन्द जीजो कि शारियां गांव में रहते हैं और परम शिष्य हैं उनके अधिक प्रेम से इस इकान्त जगह आये हैं।

सतगुणों को अपनाने की चेतावनी

पत्र नं० 54

आज्ञाकारी सती सेवक ओम प्रकाश जी !

आशीर्वाद पहुँचे । ईश्वर सत् श्रद्धा देवे । अपने तमाम कुन्बा को आशीर्वाद कहनी । ईश्वर तुम को देश भक्ति बख्शे । अपने जीवन को नित ही सत मारग में लगाते रहें। सादगी, सेवा, सतसंग, सत सिमरन, सत्य इन गुणों को ना भूलाना। यह ही ज़िन्दगी को कायम करने वाले गुण हैं। ईश्वर समता बुद्धि देवे । समता के फैलाने की कोशिश करो। तमाम अपने गुर भाइयों और सत संगीयों और नगर निवासियों को आशीर्वाद कहनी ।

(मंगत राम - अज़ चनारी)

पत्र नं० - 55

आज्ञाकारी सती सेवक छजुराम जी !

आशीर्वाद पहुँचे । पत्र मिला । ईश्वर परम आनन्द देवे । 6 मई चुनारी के ही ईद गिर्द होंगे । अगर मौका मिले तो दर्शन देना । ईश्वर विश्वास देवे और आनन्द पूर्वक जन्म व्यतीत करने की बुद्धि देवे । तमाम अपने कुन्बा को आशीर्वाद करने ।

(मंगत राम - अज़ चनारी)

गुरु आज्ञा के उलंघन पर दण्ड

श्रीनगर 12.7.52

आज्ञाकारी संगत अबहोर:

आशीर्वाद पहुँचे । सब प्रेमियों को वाजया होवे । (सूचित होवे) कि एक मामला प्रेमी बन्सीलाल और प्रेमी किशोरीलाल की धर्मपत्नियों का दरपेश है। जिसके मुतल्लिक चेतावनी दी जाती है कि प्रेमी बन्सी लाल की धर्मपत्नि ने कुछ अरसे से समता की तालीम (समता:ना) का आसरा लेकार गुरु बनकर कई स्त्रियों को उपदेश दिया है। ओर ये मामला उपदेश वाला प्रेमी किशोरीलाल के घर रायज (आरम्भ) हुआ है। उसकी धर्मपत्नि की इमां (उकसाहट) पर, बाकी आपस की नाराजगी होने से यह खबर प्रेमी किशोरीलाल ने गुरु - दरबार में दी। जैसे के हाला मालूम हुए हैं।

इनके मुताबिक इस अधिक दूषित कर्म के आरम्भ करने का जो सिलसिला इन देवियों ने रचा है, इसके वास्ते गुरु-दरबार से ये ही आज्ञा है -

"कि आइन्दा इन देवियों को किसी वक्त भी गुरु दर्शन की आज्ञा नहीं दी जावेगी और न ही जगाधरी सम्मेलन पर इनको हाजिर होने की आज्ञा दी जाती है। तमाम संगत के वास्ते एक कलंकित कर्म किया है और गुरु दरबार में जो प्रतिज्ञा की थी उसका भंग किया है और ना ही इन देवियों को गुरु उपदेश की कुछ सफलता प्राप्त होगी। ख्वाहे लाख यत्न क्यों न करे।

अगर ऐसे हालात होने पर भी गुरुडम को बन्सीलाल की धर्मपत्नी त्याग न करे तो तमाम प्रेमी इसकी पूरी-पूरी मुखालफत (विरोध) करें और तमाम समता की तालीम (समता सिद्धांत) की पुस्तकें इनसे ले लेवें और दूसरे (अन्य) लोगों को वाज्या करें कि इनको इस अनुचित कर्म के करने से गुरु-दरबार से खारिज कर दिया गया है। (निकाल दिया गया है) कोई इनकी बनावट पर न भूलें और ना ही खराब होवें। प्रेमी किशोरीलाल और बन्सीलाल को चूंकि इस मामले का पता नहीं है, इस वास्ते वह इस दोष की लपेट में नहीं आ सकते हैं। और प्रेमी दयालचन्द ने बन्सीलाल की धर्मपत्नी की सफाई की चिट्ठी लिखी है। हालांकि उसकी औरत ने खुद उपदेश उससे लिया है। सो ऐसा गुरु-दरबार में झूठ बोलना, - इसके वास्ते वह खुद ही ऐसी सजा को प्राप्त होगा जो कि गुरु-दरबार में झूठ बोलने से मिलती है"।

आइन्दा (आगे के लिए) सब प्रेमियों को चेतावनी दी जाती है कि कोई भी समता की तालीम (समता सिद्धांत) के विरुद्ध कार्यवाही सुने तो उसकी पेशबन्दी (रोकथाम) करें। आगे ही इस गुरूडम ने भारतवर्ष का नाश किया है और समता की तालीम (समता सिद्धान्त) इसी दुरुस्ती के वास्ते प्रगट हुई है। इस वास्ते तमाम प्रेमी समता की तालीम (समता सिद्धान्त) को अपनाने वाले और रख्यक (रक्षक) बनें। ऐसी एहतियात (सावधानी) में रहना चाहिए। आइन्दा इन देवियों के मुतल्लिक (बारे में) कोई पत्रिका इधर लिखने की कोई जुर्रत (हिम्मत) न करें और ना ही इधर से कोई जवाब दे सकते हैं।

ऐसे महा अपराध कर्म के करने वाले को कई जन्म सजा भुगतनी पड़ती है और जिन देवियों ने उपदेश लिया है वह ऐसा ही समझें जैसे कि कागज़ पर रोटी का लफ़्ज (शब्द) लिख' हुआ पढ़ लेने से भूख की निवृति नहीं होती। सब यत्न नेहफल (निष्फल) ही जाने।

ये पत्रिका प्रेमी किशोरीलाल और प्रेमी बन्सीलाल को बुला कर सुना देवें।

ऐसा निश्चय तो नहीं था कि इन प्रेमियों के घर से ही समता की तालीम के विरुद्ध कार्यवाही होगी। ईश्वर आइन्दा (आगे के लिए) कृपा करें और सबको सुमति देवें जिस करके निर्मल सेवक रूप में निश्चित होकर अपनी जीवन यात्रा को पवित्र कर सकें।

ये थोड़ा लिखना ज्यादा समझें। ऐसा अनर्थ कारज कहीं भी सुनने में नहीं आया है कि गुरु की मौजूदगी में शिष्य रूप में कोई गुरु बनें। ये इन देवियों ने एक खिलौना समझकर ऐसी रचना शुरु की है।

प्रेमी किशोरीलाल और बन्सीलाल की ज्यादा जिम्मेदारी है कि इनके जरिए ही इनकी धर्मपत्नियों को इनकी बड़ी प्रार्थना पर उपदेश मिला था जिसका नतीजा ये निकला। ईश्वर आइन्दा सबको गुरु वचन पालने की श्रेष्ठ बुद्धि देवें। दोबारा सब को आर्शीवाद पहुँचे।

ह० मंगतराम - अज श्रीनगर

आश्रम ट्रस्ट

1. तमाम संगत समतावाद को वाजा (ज्ञात) होवे कि आइंदा (भविष्य में) समता योगाश्रम जगाधरी व समता योगाश्रम राजपुर (देहरादून) या कोई नया आश्रम कायम होवे जो सैंटर के मतैहत (आधीन) हो उन सब का इन्तज़ाम एक ट्रस्ट के ज़रिये (द्वारा) ही होगा। ट्रस्ट के तमाम मैम्बर अपने अपने फर्ज़ को समझते हुए आश्रमों के प्रबंध में पूरा-पूरा यत्न करें। कुछ समय तक प्रेमियों की श्रद्धाभाव का अमली (क्रियान्वित) रूप देखा जावेगा। लिहाज़ा (अतः) आज से ट्रस्टी मैम्बरान अपनी अपनी जिमेवारी संभाल लें और अमली सेवा का सबूत देवें।

ट्रस्ट के मैम्बरान के नाम मंदर्जाजैल (निम्नलिखित) हैं :-

1. अमोलकराम 2. बनारसीदास 3. भगतराम (दिल्ली) 4. दीनानाथ मैंहगी (जम्मू काशमीर) 4. हकीम नत्थूराम (जगाधरी) 6. फकीर चंद (अम्बाला निवासी) 7. ओम कपूर (देहरादून)।

इन प्रेमियों में से बाबू अमोलकराम व बनारसीदास ता- जिन्दगी ट्रस्ट के मैम्बर समझने चाहिएं। बाकी प्रेमी भी तमाम जिन्दगी अगर इस सेवा में समर्पण करने का निश्चय कर लेवें और सही सेवा का सबूत देवें तो मुस्तकिल (स्थाई) मैम्बर ही होंगे। नहीं तो हालात के मुताबिक अगर कोई तबदीली करनी हुई तो कर दो जावेगी। तमाम ट्रस्टी मैम्बरान में से अगर कोई मैम्बर समता के असूलों का पाबंद न रहेगा तो उस की तबदीली कर दी जावेगी।

अब तमाम ट्रस्टी व मैम्बरान अपनी जिमेवारी का अनुभव करके इस सेवा के महा कारज को सरइंजाम देवें (क्रियान्विन करें) और तमाम संगत इन प्रेमियों के साथ पूरा-पूरा सहयोग देवे। यही गुरु आज्ञा सब के वास्ते है। ईश्वर आज्ञाकारी भावना देवे।

दस्तखत (हस्ताक्षर) मंगतराम (हाल जगाधरी)

25/9/53

II. प्रबंधक मंडल संगत समतावाद के नियमः

1. जिला की तमाम संगतों से दो या तीन मैम्बर प्रबंधक मंडल में शामिल होने चाहियें।

2. आश्रम टस्ट के मैम्बरों की तबदीली श्री सत्गुरु महाराज की अदम मौजूदगी (गैर मौजूदगी) में प्रबंधक मंडल के ज़िमे ही होगी।

3. मंडल में से समता की तालीम को जागृत करने की खातिर सेवादार भिक्षु मुकर्रर करने चाहिएं।

4. तमाम प्रकार की प्रमाथिक उन्नति के मुतल्लिक प्रोग्राम सोचना मंडल का ही काम होगा।

5. मंडल की कायमी जिस वक्त संगत चाहे कायम कर लेवे। मगर बहतर होगा कि इस साल मुकामी (स्थानीय) मंडल कायम कर लेवें। अगले साल सम्मेलन पर सैंट्रल मंडल कायम कर लेवें।
6. मंडल के मैम्बर ऐसे होने चाहिए जो समता के असूलों पर पूर्ण निश्चय से कारबंद हों।

दस्तखत : मंगतराम (हाल जगाधरी - वर्तमान जगाधरी)

25.9.53

III. प्रबंधक कारजों में कार्यकर्ता प्रेमियों के इस तरीका से स्थान कायम करने चाहियें : -

1.क) अति मुख सेवादार यानी सर्व समर्पण भाव रखने वाला।

ख) मुख सेवादार यानी समर्पण भाव रखने वाला।

ग) भावुक सेवादार यानी भावना सहित सेवा करने वाला।

घ) सेवादार यानी निमित मात्र समय के मुताबिक सेवा करने वाला।

2. चूंकि परमार्थ मार्ग में सेवादारों का ही प्रबंधक होना कल्याणकारी होता है, इस वास्ते ऊपर के नामों के मुताबिक प्रधान व सैक्ट्री के नाम होने चाहियें।

3. अकसर (प्रायः) परमार्थ में प्रधानता की खातिर बड़ी-बड़ी धड़े बंदियाँ हो जाया करती हैं। इस वास्ते प्रधान लफज़ का त्याग करके सेवादारों का लफज़ (शब्द) निश्चित कर लेना चाहिए।

4. अत्ति मुख सेवादार भाव वाला प्रेमी न मिले तो मुख सेवा दार के भाव वाले को ही मुखी कायम कर लेना चाहिए। अगर मुखी सेवादार की भावना वाला भी न मिले तो भावुक सेवादार को ही मुखी कायम कर लेना चाहिए। अपने प्रबंध कार्य को इस रीति से पूरा करने का यत्न करना चाहिए।

5. जिस-जिस जगह खास मजबूरी से कमेटी बनाई होवे तो ऐसे ही सेवादारों का लक्षण विचार करके मुखी कायम कर लेने चाहियें।

6. अगर बिना रजिस्टर्ड संगत के काम चल सके तो चलाना चाहिए। नहीं तो हसब ज़रूरत (आवश्यकता अनुसार) संगत को रजिस्टर्ड करा लें।

7. सत्यावादी, त्यागी, परोपकारी तथा मुकम्मिल पांच असूलों के सहित सेवादारों का सरूप तमाम संगत और तमाम संसार के वास्ते जीवन रूप है। ऐसा निशचय होना चाहिए।

दस्तखत : मंगतराम (हाल जगाधरी - वर्तमान जगाधरी)

25.9.53

IV. समता योगाश्रम जगाधरी की प्रबंधक नीति : -

1. श्री सत्गुरु देव जी की आज्ञानुसार अपनी आध्यात्मिक उन्नति के वास्ते समता योगाश्रम जगाधरी में संगत ने कायम किया है जोकि संगत का ही पूजनीय स्थान है और इस के प्रबंध के वास्ते संगत ही जिमेवार है।

2. आईंदा (भविष्य) जमाने में आश्रम की बाहतमामी (समस्त उत्तरदायित्व) एक शख्स (एक व्यक्ति) के नाम दुविधा का कारण है और आश्रम के प्रबंध के वास्ते भी हानिकारक है। इस वास्ते आश्रम के प्रबंध के वास्ते ट्रस्टी होने चाहिएं।

3. ट्रस्ट में ऐसे प्रेमी शामिल होने चाहियें जिन्होंने अपना तमाम जीवन संगत सेवा में अर्पण किया हो या जो अपनी कमाई का दसबंध गुरू आज्ञा अनुसार संगत सेवा या आश्रम सेवा में भेंट करते चले आये हों या आईदा (भविष्य में) अपनी कमाई का सदबंध आश्रम सेवा में भेंट करना चाहते हों और समता के सत् नियमों के पूर्ण अनुयायी हों। तो ऐसे परम श्रद्धावान चंद प्रेमियों के नाम ट्रस्टी आश्रम के होने चाहिए और इस तरह जब कभी मैम्बर की तबदीली होवे तो ऐसे ही श्रद्धावान प्रेमी को ट्रस्ट में शामिल करना चाहिए। संगत के वास्ते मैम्बरों को उत्साह आश्रम प्रबंध में पढ़ाना अधिक लाज़मी है, तब ही आश्रम का प्रबंध समता के नियमों के अनुकूल शुद्ध रीति से चलता रहेगा।

4. संगत जिस वक्त भी चाहे ट्रस्टी कायम कर सकती है। सत्गुरु महाराज जी की पूर्ण आज्ञा संगत के वास्ते है। सब संगत को इस प्रबंधक प्रोग्राम का बोध होना चाहिए।

5. यह नीति बतौर चेतावनी आईंदा ज़माने में आम के प्रबंध के मुतल्लिक तहरीर कर दी जाती है जिस पर तमाम प्रेमी कारबंद रहें।

दस्तखत : मंगतराम अज्ञ श्रीनगर

30 अषाड़ सम्बत-2009 बामुताबिक जुलाई सन् 1952

इस के अतिरिक्त जब जगाधरी में समता योगाश्रम कायम हो गया था तो गुरुदेव ने इस के सार नियम भी फरमा दिये थे।

समता के प्रेमियों के लिए नियम
(तमाम प्रेमी इन नियमों के पूर्ण रूप से पाबंद रहें)

1. किसी भी मज़हब के बुजुर्ग की तौहीन (निरादरी) नहीं करनी चाहिए। बल्कि उन का श्रेष्ठ गुण धारण करना चाहिए ।

2. जौ भी सत्संग में आये उसकी श्रद्धा बढ़ानी चाहिए। किसी किस्म का भी उस का अपमान नहीं होना चाहिए।

3. जितना भी कोई अधिक सेवादार बने या अधिक उन्नति करे उतना हो उसको निर्मान होना चाहिए। कितना भी कोई पाप वृत्ति वाला क्यों न होवे उस के साथ पवित्र भाव और आदर से पेश आना चाहिए। किसी किस्म का मलीन भाव रखना अपनी पवित्रता के नाश करने वाला है। ऐसा निश्चय होना चाहिए।

4. समता के अनुयायी प्रेमी अपने आप को सही सेवक बनाने का यत्न करें। इस से भी अपना जीवन उन्नत होता है। और धर्म की भी जागृति होती है।

5. संगत में कोई भी बड़ा बनने का यत्न न करे। बल्कि अधिक से अधिक सेवादार बनने की कोशिश करे इस से ही प्रेम बढ़ता है।

6. किसी किस्म की मसखरी और हंसी संगत में करनी एक निहायत जहालत की निशानी है। इस वास्ते इस विघ्न से पवित्र रहने का यत्न करें।

7. आपस में अधिक प्रेम और एक दूसरे का अधिक आदर करना चाहिए। इस से समता भाव प्रकाशता है और दूसरे सज्जन भी निर्मल आदर्श देखकर श्रद्धा युक्त होते हैं।

8. अधिक पवित्र जीवन बनावें, बातों से कल्याण नहीं हो सकती। बल्कि बादमुबाद बढ़ता है। अच्छी तरह से इन नियमों को विचार करके हर वक्त अपने आप को बाहोश रखें। आईंदा (भविष्य में) कोई नुक्स देखने में न आवे। ईश्वर सद् बुद्धि और गुरु बचन विश्वास देवे। 25.03.1952

नोट :- यह नीति गुरु देव ने 25/3/52 को अम्बाला में संगत के प्रेमियों के लिए निर्धारित फरमाई थी। (असल संलग्न है)

आश्रम सम्बन्धी आदेश

(जब 1950 में समता योगाश्रम जगाधरी बन कर तैयार हो गया तो इन्हीं दिनों गुरुदेव ने कुछ खास आदेश फरमाये)

I. आश्रम की कायमी का मकसद

आश्रम इस गर्ज से कायम हुए हैं और होंगे कि जिनमें संगत एकत्र होकर ख्यालात की एकता, कोशिश की एकता, यानी बाहमी (आपसी) मेल मिलाप, अपनी बहतरी व अपने कल्याण की खातिर सोचे। रिटायर्ड शुदा प्रेमी सज्जन दुनयावी कामों से फरागत (फुरसत) पाकर यानी वक्त निकाल कर तप की खातिर रह सकें।

समता योगाश्रम के सार नियम :

1.यह समता योग आश्रम समता अनुयायी प्रेमियों के वास्ते एकत्र होकर सत् बोध प्राप्त करने और विरक्त प्रेमियों के वास्ते अभ्यास की खातिर एक एकान्त स्थान कायम किया गया है। आश्रम की हद्द के अन्दर किसी किस्म की मुनश्शयात (नशे वाली वस्तुएं) सेवन और मांस भक्षण की बंदश है, समता के विरुद्ध कोई कार्यवाही आश्रम में नहीं होनी चाहिए।

2. किसी अजनबी को आश्रम में ठहरने का हुकम नहीं है। अगर मजबूरी से कोई ठहरना चाहे तो केवल एक दिन रात (24 घंटे) ठहर सकता है पूरी जांच पड़ताल के बाद।

3. सत्संग आश्रम में रोज़ाना होना चाहिए। अगर संगत का प्रेम होवे तो साल में दो दफा भी एकत्र हो सकते हैं। समय अनुकूल विचार कर लेना चाहिए। अगर हालात अनुकूल न होवें तो सालाना आम सम्मेलन की बजाये छोटा सत्संग कर लेना चाहिए। वैसे प्रेमी हर वक्त आश्रम में आ जा सकते हैं अपनी मानसिक शान्ति की खातिर।

4. सम्मेलन के दौरान में आश्रम के एहाता में इशनान की पाबंदी होनी चाहिए। दूसरी ज़मीन में संगत के नहाने व कपड़े धोने वगैरा का प्रबंध होना चाहिए।

5. माताओं को रात के वक्त आश्रम में ठहरने का हुक्म नहीं है। सिरफ सम्मेलन के लंगर की सेवा की खातिर रात अगर काम होवे तो आश्रम में रात को काम करते हुए समय व्यतीत कर देवें तो कोई पाबंदी नहीं है। माताओं के वास्ते दूसरी जमीन में ठहरने का इन्तजाम होना चाहिए।

(जीवन गाथा जिल्द दोयम सफा न० 392)

II. आश्रम की ज़मीन के सम्बन्ध में :

1. ज़मीन को ब्यौहारिक रूप न देना।

2. चूंकि कई किसम के कानून बनने वाले हैं इसलिये बैरुनी ज़मीन में बाग लगा देना। इससे ज़मीन महफूज़ (सुरक्षित) रहेगी।

3. यहाँ के खर्च यहीं से निकालना।

4. रुपया जमा न करना।

5. हाल उस जगह बनवाना जहां सम्मेलन के दौरान सत्संग किया जाता है। उस जगह के मगरबी (पश्चिमी) तरफ इस को बनवाना।

6. नौकरों की रिहायश के लिए परे शमाल-मगरबी (उत्तर- पश्चमी) कोना में कमरे बनवाना।

7. लायब्रेरी के ऊपर कमरा बनवा देना। ऐसा समय आने वाला है, जब फकीर कहीं आ जा नहीं सकेंगे। सिलसला आमदोरफत बंद हो जायेगा। फकीर एक तरफ आसन पर बैठे रहेंगे, किसी से मिलें जुलेंगे नहीं।

III. आश्रमों में स्वार्थ कारजों की पाबंदी :

गुरुदेव महारादज मंगतराम जी के आश्रम संम्बधी अदेश अनुसार समता आश्रम की कायमी संगत के एकत्र होकर अपनी उन्नति के विचार करने, आपसी प्रेम पढ़ाने, एकता का संचार करने के लिए हुई है। लेकिन हम संसारी यही चाहते हैं कि जैसे हरद्वारा जैसे तीर्थ में जा कर हम अपने स्वार्थ कारज करते हैं। वैसे ही समता योग आश्रम भी संगत का तीर्थ स्थान है वहां भी ऐसा करें। इसी विचार की दृष्टि में जब एक प्रेमी ने गुरुदेव के जीवन काल में ही यह आज्ञा फरमाने के लिए लिखा कि आश्रम में मुण्डन संसकार आदि करने के लिए इजाजत दी जाये तो आप ने आश्रम की पवित्रता और स्तंत्रता की दृष्टि में किसी भी स्वार्थ कारज को आश्रम में आज्ञा नहीं दी।

जैल में (निम्नलिखित) उन के दो पत्रों द्वारा आदेश संगत समतावाद के प्रेमियों एवम् सत् के जिज्ञासुओं की जानकारी और इस आज्ञा की पालना के लिए दिए जा रहे हैं। (अडीटर) 1 जून 1951 में गुरुदेव महाराज मंगतराम जी सिद्ध खड्ड मसूरी में एकांत वास कर रहे थे। उनहीं दिनों आप के परम शिष्य बाबू अमोलकराम जी ने जगाधरी समतायोगाश्रम में पोते के मुण्डन के सम्बंध में पत्र द्वारा गुरुदेव से आज्ञा मांगी तो उस समय आप ने मंदरजा जैल (निम्नलिखित) पत्र द्वारा इस की मनाही कर दी। फरमाया :

वाज़ा (ज्ञात) होवे कि आश्रम को सिरफ परमार्थ कारज तक ही महदूद रखना चाहिए और किसी किसम के परिवारक कारज ऐसे त्याग आश्रम के वास्ते शोभा दायक नहीं हैं। अच्छी तरह विचार कर लेवें। इस का असर खुद तुम्हारी ज़िन्दगी और आश्रम दोनों के वास्ते नामौजूं (अयोग्य, अनुचित) है। इस वास्ते स्वार्थ कारज के वास्ते आश्रम में आज्ञा नहीं हो सकती।

(मंगतराम अज सिद्धखड्डू मसूरी)
जीवन गाथा भाग दूसरा पृ० 206

एक दूसरे पत्र में मार्च 1952 में जब आप हलद्वानी (यू पी) में विराजमान थे तो किसी अन्य प्रेमी के इजाज़त मांगने पर इस प्रकार मुण्डन संसकार की पाबंदी का आदेश दिया:

"आश्रम में मुण्डन संसकार के रिवाज का कायम करना एक मदं निश्चय है और तोहमात प्रस्ती (पाखण्डमयी) पूजा है। इस वास्ते हर एक प्रेमी आईंदा (भविष्य में) अपने अपने घर में ही मुण्डन संसकार रीति सत्संग कर के कर सकता है अगर सादगी मसता सिद्धान्त के अनुसार (के अनुकूल) करना चाहे तो। आश्रम तो सिरफ परमार्थ साधन के लिए ही है। इस वास्ते आश्रम में महज़ (केवल) मुण्डन संस्कार की रीति को जारी करवाने की पाबंदी से आज़ाद होना चाहिये और न ही किसी स्वार्थ कार्य के आरम्भ की वहां इजाजत दी जाती है। तमाम प्रेमियों को बोध होना चाहिये। इश्वर सुमति देवे।

मंगतराम अज़ हल्द्वानी (10/3/52)

आरती

तूं पार ब्रह्म परमेश्वर, तीन काल रछपाल।
नित पाऊँ शरनागती, सत चरण कँवल दयाल॥
तूं नित पतित उद्धार है, पूरन प्रभ जगदीश।
मोह माया संकट हरो, दीजो ज्ञान संदेश॥
नित ही तेरे चरण की, मन में रहे परीत।
तूं दाता दातार है, पुरुखोत्तम सुखरीत॥
पवन पानी बैसन्तर, धरती और आकाश।
सबको सरजनहार तूं, आद पुरख अबनाश॥
घट - घट व्यापक तूं परमेश्वर, सरब जियाँ आधार।
अनमत कूकर को राख लें, किरपा निद्ध करतार॥
काल करम जाए दूषना, खल बुद्धि हरो अज्ञान।
सत श्रद्धा पाऊँ चरण की, अखण्ड प्रेम चित ध्यान॥
दीनानाथ दयाल तूं, पल पल होत सहाये।
कीरत साचे नाम की, मन तन आए सहाये॥
अन्तर का सब खेद हरो, दीजो सत विश्वाश।
शरणागत हूँ मंधमती, घट अन्तर करो परकास॥
अन्तरगत सिमरन करूँ, निरन्तर धरूँ ध्यान।
घट घट में दर्शन करूँ, आद पुरख भगवान॥
तूं साचा साहिब सरब परकाशी, शबद रूप आखण्ड।
गुनी मुनी उस्तत करें, तन मन पाएँ आनन्द॥

होवें दयाल हूँ सत परमेश्वर, देवें धीर अपार।
निमख निमख सिमरण करूँ, चित चरण रहे आधार॥
काया अन्तर परतख होवें, नाद रूप बिसमाद।
पल पल कीजूँ आरती, तन मन तजूँ व्याध॥
जग आवन सुफला होवे, तेरी आज्ञा मन में ध्याऊँ।
अन्तरगत करूँ आरती, भव दुस्तर तर जाऊँ॥
अन्धमत मूढ़ा नित प्रती, तेरे चरनी करे पुकार।
'मंगत' माँगे दीनता, सत धर्म सुख सार॥

" समता मंगल "

समता धरम हृदय रसे, बिख ममता होवे नाश।
सत सरूप परमात्मा, जल थल पाऊँ परकाश॥
सब जीवों से प्रेम हो, तन मन सेवा धार।
समता साधन पाये के, नित परसाँ जै जैकार॥
सत कर्म सत निश्चय, निर्मल पाऊँ विचार।
'मंगत' समता धार के, जीत चलो संसार॥
सत कर्म सत निश्चय, निर्मल पाऊँ विचार।
'मंगत' समता धार के, जीत चलो संसार॥

श्री सद्गुरुदेव महाराज द्वारा

तपोभूमि-आश्रम के लिए निर्धारित नियम

श्री सद्गुरुदेव महाराज मंगतराम जी ने अपने कर कमलों से तपोभूमि-आश्रम के निम्नलिखित नियम अंकित किये हैं -

समता योग साधन, तपोभूमि, राजपुर (देहरादून) के नियम दिनाँक 6.8.1953.

1. तपोभूमि की हदूद (सीमाओं) में तमाम मुनश्यात (मादक द्रव्यों) और माँस-भक्षण की पूरी-पूरी पाबन्धी (निषेध) है।

2. तपोभूमि में तमाम देहरादून निवासी प्रेमी माहवारी सत्संग कायम रक्खें।

3. खास त्यौहारिक सत्संग के बगैर माताओं को तपोभूमि (आश्रम) में सत्संग में शामिल होने की इजाज़त न होगी।

4. माताओं को नंगे सिर तपोभूमि की हदूद (सीमा) में शामिल होने की इजाज़त न होगी और न ही रात को ठहरने की।

5. जो-जो समतावादी तपस्या की खातिर तपोभूमि में ठहरना चाहें, वे अपना खर्च खुद (स्वयं) बरदाश्त (वहन) करें।

6.खास कोई विरक्ति रूप में (त्यागी) प्रेमी होवे तो उसका खर्च देहरादून के प्रेमी बरदाश्त करें।

7. किसी अजनबी (अपरिचित) को तपोभूमि में रात को ठहरने की इजाज़त न होगी।

8. अधिक समां (समय) कोई तपोभूमि में ठहरना चाहे तो श्री सद्गुरुदेव महाराज (अब आश्रम-प्रबन्ध) की आज्ञा से ठहर सकेगा।

9. तपोभूमि में पलंग वगैराह और दीगर तमाम किस्म का फर्नीचर बिछाने की इजाज़त न होगी। समता के पाँच असूलों यानि सादगी, सत्य, सेवा, सत्संग और सत्-सिमरण का सही उपयोग पूर्ण रूप में तपोभूमि में होना चाहिए।

10. सैरो-तफरीह (पिकनिक), चौपड़, ताश व दीगर किसी किस्म की भी सदाचारी जीवन के विरुद्ध कार्यवाही करने की मुतलिक (सर्वथा) इजाजत (आज्ञा) नहीं है।

मंगतराम, अज्ज्ञ राजपुर, 6.8.53

समता साहित्य	मूल्य
1. ग्रंथ श्री समता प्रकाश (वाणी) (हिन्दी)	100.00
2. ग्रंथ श्री समता प्रकाश (वाणी) (उर्दू)	50.00
3. ग्रंथ श्री समता विलास (प्रवचन) (हिन्दी, उर्दू)	50.00
4. समता ज्ञान पुष्प माला (हिन्दी)	15.00
5. गुरुदेव ने कहा (हिन्दी)	20.00
6. प्रार्थना तथा वैराग्य अंक (हिन्दी)	20.00
7. समता वाद नित-नियम गुटका (हिन्दी, उर्दू)	4.00, 2.00
8. जीवन गाथा (भाग - 1, 2) (हिन्दी)	25.00 (प्रति भाग)
जीवन गाथा (भाग - 1, 2) (उर्दू)	50.00
9. ऐसे थे गुरुदेव हमारे (हिन्दी, उर्दू)	20.00, 10.00
10. जमाना हाल के परम योगी राज (हिन्दी, उर्दू)	10.00 (प्रति)
11. समता ज्ञान दीपक/हिन्दी/ रेह नुमाये मार्फत (उर्दू)	15.00 (प्रति)
12. संस्मरण - श्री गुरुदेव संबंधित (हिन्दी)	20.00
13. मेरे गुरुदेव (हिन्दी)	50.00
14. कसूर किस का (उर्दू)	8.00
15 .संगत समतावाद की ओर से प्रचारार्थ	
दो मासिक पत्रिकाएं भी निकाली जाती हैं।	
समता दर्पण (उर्दू) वार्षिक शुल्क	60.00
समता संदेश (हिन्दी) वार्षिक शुल्क	50.00

मिलने का पता :-

समता योगाश्रम (पुल रेल, रिंगरोड)

नारायणा, नई दिल्ली - 110028